गोलालारीय समाज का मुखपत्र

golalariya.darshan@gmail.com

गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –

www.golalariya.com

मासिक

गोलालारीय दर्शन

अपनों के साथ अपनी बातें

लेट पोस्टिंग

RNI No. MPHIN/2008/26873

No. MP/IDC/1252/2018-2020

सेवा में,

महामस्तकाभिषेक विशेषांक

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं । हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको समाज से प्यार नहीं ।

वर्ष : 9 अंक : 5 पृष्ठ संख्या : 12 माह – 15 मार्च 2018 सहयोग राशी 1100/– देकर सदस्य बनें ।

शांति, अहिंसा, करुणा के प्रतीक हैं गोम्मटेश्वर बाहुबली

जैन परम्परा की धाराएँ पूरे देश को जोड़ती है – राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद

श्रवणबेलगोला । देश के राष्ट्रपति महामहिम रामनाथ कोविंद ने 7 फरवरी 2018 को कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में गोमटेश्वर बाहुबली भगवान के महामस्तकाभिषेक के भव्य और ऐतिहासिक महामहोत्सव का उद्घाटन किया । इस अवसर पर महामस्तकाभिषेक का कुशल नेतृत्व कर रहे जगतगुरू पूज्य स्वस्ति श्री चारुकीर्ति जी स्वामी, राष्ट्रपति महोदय की धर्मपत्नी श्रीमती सविता कोविंदजी भी उपस्थित रहीं । साथ में कर्नाटक के राज्यपाल वजुभाई वालाजी, मुख्यमंत्री सिद्धरमैयाजी, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री सिद्धमैयाजी, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री एच डी देवगौड़ाजी, श्री वीरेंद्र हेगड़ेजी, कर्नाटक के पशुपालन मंत्री ए.मंजू, अभय चंदजी, महामस्तकाभिषेक समारोह की अध्यक्षा श्रीमति सरिता जैन चेन्नई आदि लोग उपस्थित रहे ।

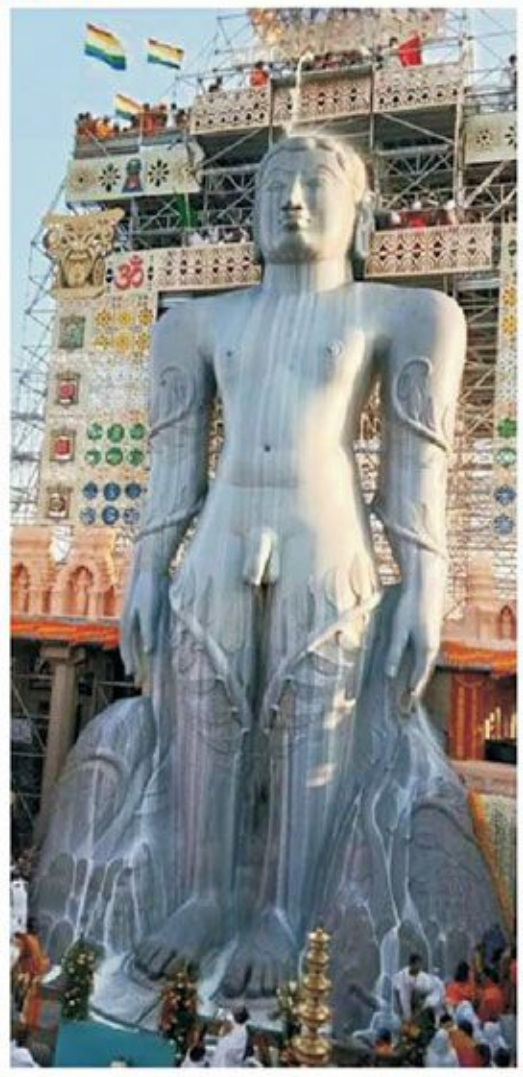

इस अवसर पर देश के महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी ने अपने संबोधन में कहा कि शांति, अहिंसा, करुणा के प्रतीक बाहुबली स्वामी की प्रतिमा को देखकर मुझे अति प्रसन्नता हो रही है । यह क्षेत्र सदियों से मानवता का संदेश देता रहा है । हम सभी जानते हैं कि ऋषभदेव (आदिनाथ) के पुत्र भगवान बाहुबली चाहते तो अपने भाई भरत के स्थान पर राजसुख भोग सकते थे । लेकिन उन्होंने सब कुछ त्याग कर तपस्या का मार्ग अपनाया और पूरी मानवता के कल्याण के लिए आदर्श प्रस्तुत किये । 1,000 वर्ष पहले बनाई गई यह प्रतिमा उनकी महानता का प्रतीक है । इस प्रतिमा के कारण यह क्षेत्र देश–विदेश में आकर्षण का बड़ा केंद्र रहा है । हमारी सांस्कृतिक और भौगोलिक एकता का बहुत बड़ा केंद्र यह क्षेत्र बना हुआ है । आज से 23 सौ वर्ष पूर्व मध्य प्रदेश के उज्जैन से जैन आचार्य भद्रबाहु यहां पधारे थे । बिहार के पटना क्षेत्र के उनके शिष्य मौर्य साम्राज्य के संस्थापक मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त भी यहां आए थे । वह अपनी शक्ति के शिखर पर रहते हुए भी सारा राजपाट छोड़कर अपने पुत्र बिंदुसार को राज सौंपकर यहां आ गए थे। यहां आकर उन्होंने एक मुनि का जीवन अपनाया और तपस्या की । यहीं चंद्रगिरी की एक गुफा में अपने गुरू का अनुसरण करते हुए चंद्रगुप्त ने सल्लेखना का मार्ग अपनाया और शरीर का त्याग किया । राष्ट्र निर्माताओं ने शांति, अहिंसा, करुणा और त्याग पर आधारित परंपरा की यहां नींव डाली । धीरे–धीरे देश के लोग यहां आने लगे और यह क्षेत्र आकर्षण का केंद्र बन गया । जैन परंपरा की धाराएं पूरे देश को जोड़ती है, मैं जब बिहार का राज्यपाल था तब भगवान महावीर की जन्म और निर्वाण भूमि में जाने का अवसर मिला था । आज यहाँ आने का अवसर प्राप्त हुआ है ।

इस प्रतिमा का निर्माण कराने वाले गंगवंश के प्रधानमंत्री चामुंडराय और उनके गुरु ने सन 981 में पहला अभिषेक किया था उसके बाद हर 12 वर्ष में अभिषेक की परंपरा चालू हुई, जो आज भी जारी है । भगवान बाहुबली की यह विशाल प्रतिमा जो हम सब लोगों के लिए पूजनीय व दर्शनीय है । गोमटेश्वर की यह प्रतिमा भारत की विकसित संस्कृति, स्थापत्य कला, वास्तुकला और मूर्ति कला का बेजोड़ उदाहरण है । शिल्पकारों ने अपनी श्रद्धा और भक्ति से एक विशाल निर्जीव ग्रेनाइट के पत्थर में जान डाल दी । अहिंसा परमो धर्म का भाव इस प्रतिमा के मुख मंडल पर अपने पूर्ण रूप में दिखाई देता है । भगवान बाहुबली की यह दिंगबर प्रतिमा और इस पर माधवी लताओं की आकृतियां उनकी तपस्या के बारे में बताने के साथ–साथ यह भी स्पष्ट करती है कि वह किसी बनावटी पदार्थों से मुक्त थे और प्रकृति के साथ एकाकार थे । जैन मुनियों ने यह परम्परा आज भी कायम रखी है, जैन धर्म के आदर्शों में हमें प्रकृति के संरक्षण की सीख मिलती है । जैन धर्म के आदर्शों में सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चारित्र को तीन रत्नों के रूप में जाना जाता है, यह तीनों पूरे विश्व के लिए कल्याणकारी है । शांति, अहिंसा, भाईचारा, नैतिक चरित्र द्वारा ही विश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है ।

मुझे बताया गया है कि विश्व शांति हेतु प्रार्थना करने के लिए कई बाहरी देशों से तथा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में भारी संख्या में आज यहां श्रद्धालु आए हुए है। हमारे सामने जो विद्यमान गोम्मटेश की प्रतिमा है उसके चेहरे पर भी पीड़ित मानवता के कल्याण के लिए सहानुभूति का भाव दिखाई देता है । आप सब की प्रार्थना में निहित विश्व कल्याण की भावना आतंकवाद और तनाव से भरे इस दौर में सभी के लिए शिक्षाप्रद है । मैं सभी देशवासियों की ओर से विश्व शांति के लिए प्रतिबद्ध आप सभी श्रद्धालुओं को इस कल्याणकारी प्रयास में सफलता की शुभकामनाएँ देता हूं । मुझे प्रसन्नता है कि आप सभी श्रद्धालुओं के साथ जैन धर्म के इस ऐतिहासिक महाकुंभ महोत्सव का मुझे साक्षी बनने का आज अवसर मिला है । मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि यहां के ट्रस्ट के प्रयास से बच्चों के लिए स्कूल, अस्पताल, इंजीनियरिंग कॉलेज, पॉलिटेक्निक और नर्सिंग कॉलेज की स्थापना कराई गई है और एक प्राकृत विश्वविद्यालय एवं चिकित्सा महाविद्यालय के निर्माण पर भी कार्य चल रहा है । मैं सभी आयोजकों, श्रद्धालुओं, पंचकल्याणक, महामस्तकाभिषेक से जुड़े सभी आयोजनों के सफलता की कामना करता हूँ । इस अवसर पर कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम वजूभाई वाला ने कहा कि हम सभी आज यहां पर आध्यात्मिक और पवित्र कार्य के लिए एकत्र हुए हैं । हम यहां पाषाण की मूर्ति के दर्शन के लिए एकत्र नहीं हुए हैं बल्कि मूर्ति में जो सत्य, अहिंसा रूपी चेतनता है, हम सब उसके दर्शन के लिए एकत्रित हुए हैं । हमारी संस्कृति त्याग की संस्कृति है । महावीर ने राजपाट का त्याग किया । गोमटेश्वर बाहुबली भगवान त्याग से महान बने । हमारी संस्कृति देने की संस्कृति रही है । देने में आनंद आता है । देश की सांस्कृतिक विरासत को बचाये रखने के लिए हमें भौतिकवाद को छोड़कर अध्यात्म की ओर जाना होगा । राज्यपाल महोदय ने भामाशाह के महान दान का भी उल्लेख करते हुए समाज और राष्ट्र निर्माण के लिए कुछ ना कुछ त्याग करने की बात कही । उन्होंने जैन दर्शन के सत्य, अहिंसा, अचौर्य, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य को जीवन में उतारने की बात पर जोर दिया । कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया जी ने भी गोमटेश्वर बाहुबली भगवान के इस महामस्तकाभिषेक को ऐतिहासिक बताया । राजर्षि डॉक्टर वीरेंद्र हेगड़े जी ने भी इस अवसर पर सभा को संबोधित किया । जगतगुरू पूज्य स्वस्ति श्री चारुकीर्ति जी स्वामी ने भी अपने उद्बोधन में भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक की ऐतिहासिक परंपरा के बारे में अवगत कराया और महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद जी के अपनी धर्मपत्नी सविता गोविंद जी के साथ पधारने पर उनका अभिनंदन किया । इस अवसर पर परम पूज्य आचार्य श्री वर्धमान सागरजी महाराज ने अपने आशीष वचन में कहा कि 'अहिंसा से सुख और त्याग से शांति' भगवान बाहुबली के इस परम संदेश से समग्र विश्व का वातावरण परिवर्तित हो सकता है । राष्ट्रपति सहित सभी अतिथियों ने मंचासीन परम पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज सहित सभी आचार्यों, मुनिराजों, माताजी के दर्शन पर आशीर्वाद ग्रहण किया ।

*संकलन – अनुपमा जैन, सहसंपादिका

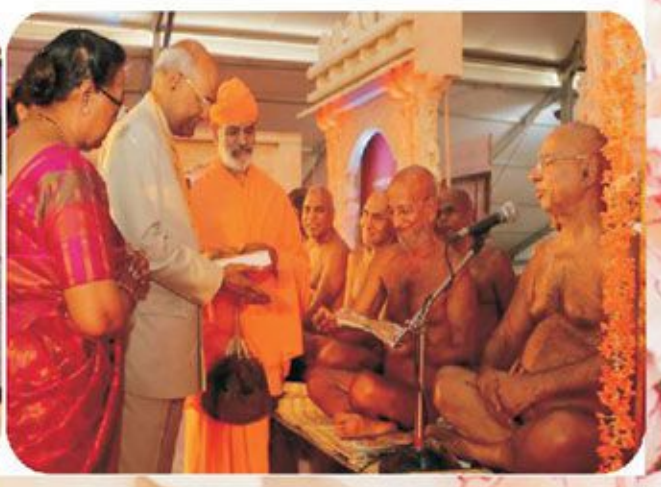

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने तीर्थंकरों से प्रेरणा लेकर अहिंसा का मार्ग अपनाया : नायडू

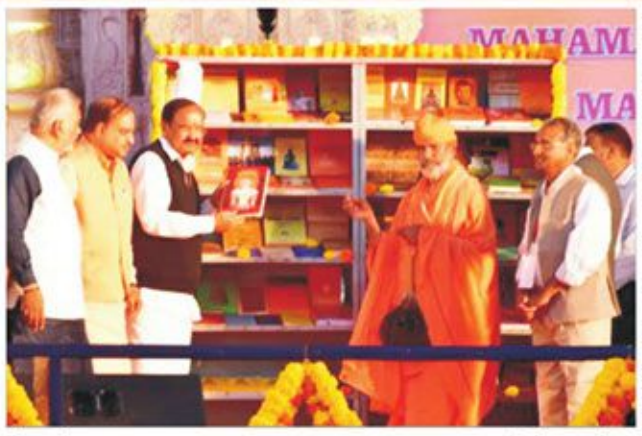

गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक के पंचकल्याणक में चौथे दिवस शनिवार को राज्याभिषेक महोत्सव में उपराष्ट्रपति वैंकेया नायडू ने कहा कि 'जीओ और जीने दो' से बड़ा कोई सन्देश नहीं हो सकता है । राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने तीर्थकारों से प्रेरणा लेकर ही अहिंसा का मार्ग अपनाया, भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक महोत्सव हमें भगवान बाहुबली एवं तीर्थंकारों के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है । गुरूओं का आशीर्वाद लेना हमारी परम्परा रही है । गुरू हमें सद्ज्ञान व सद्बुद्धि देने वाले हैं, पैदल धर्म का प्रबोधन करना मामूली कार्य नहीं है । जैनधर्म के त्रिरत्न सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चारित्र बहुत जरूरी है । धार्मिक भावना पहचान है, पूजा पद्धति अलग-अलग हो सकती है, लेकिन देश के लिए जीना हमारी जीवन पद्धति है । जैन समाज के लोग समाज के लिए खर्च करते है यह अच्छी बात है । आज पूरा विश्व भारत की ओर देख रहा है । अपनी रोटी बांटकर खाना भारतीय संस्कृति है, मैं यहां आकर बहुत आनंद महसूस कर रहा हूँ, जीवन में शिक्षा फिर सेवाभाव व समाज में कुछ करने का भाव होना मानव सेवा है ।

श्री नायडू ने कन्नड, हिन्दी, अंग्रेजी भाषा में भारतीय संस्कृति भगवान बाहुबली का संदेश, सत्य अहिंसा, श्रवणबेलगोला पर्वत की चर्चा करते हुए कई आयामों को छूआ और कहा कि कोई जाति उच्च-नीच नहीं होती, दूसरों की पूजा पद्धति की अवहेलना करना हमारी पद्धति नहीं है । अलग भाषा, अलग वंश- भारत देश एक रहा है । अपने विधायक कार्यकाल में श्रवणबेलगोला दर्शन का जिक्र करते हुए उन्होंने जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिओं चारूकीर्ति भट्टारक स्वामीजी विगत 48 वर्षों से श्रवणबेलगोला के लिए समर्पित व्यक्तित्व बताया । अंतर्मुखी मुनि पूज्य सागरजी महाराज ने बताया कि मंच पर पहुंचने के साथ ही उपस्थित राष्ट्रगौरव आचार्य श्री वर्धमानसागरजी महाराज सहित 350 पिच्छीधारी आचार्य मुनिराज, आर्यिका माताजी को नमन कर उनका आशीर्वाद लिया । राष्ट्रगान के साथ प्रारम्भ राज्याभिषेक समारोह में भगवान बाहुबली की स्तुति सोम्या-सर्वेश जैन ने प्रस्तुत की । स्वागत भाषण कर्नाटक राज्य महामस्तकाभिषेक कमेटी के अध्यक्ष व प्रभारी मंत्री ए. मंजू ने दिया ।

केंद्रीय मंत्री अनंतकुमार ने कहा : श्रवणबेलगोला के प्राकृत संस्थान को विश्वविद्यालय के रूप में विकसित करेंगे । केन्द्रीय मंत्री अनंतकुमार ने कहा कि आज विश्व को बाहुबली टेक्नालॉजी की आवश्यकता है, अहिंसा त्याग-शांति-मैत्री-प्रगति बहुत आवश्यक है । उन्होनें कहा कि पूज्य भट्टारक स्वामीजी की प्रेरणा से जो प्राकृत संस्थान चलाया जा रहा है उसे पहला प्राकृत विश्वविद्यालय के रुप में भारत सरकार विकसित करेगी, केन्द्रीय संसाधन मंत्री जावड़ेकर ने इसके लिए अपनी सहमति प्रदान कर दी है। भगवान महावीर जन्मभूमि वैशाली में भी प्राकृत विश्वविद्यालय होना चाहिए इस हेतु में बिहार सरकार से भी चर्चा करूंगा । प्राकृत के दो विश्वविद्यालय सम्पूर्ण विश्व में दीप स्तम्भ का कार्य करेंगे ।

108 पुस्तकों का विमोचन – महामस्तकाभिषेक में श्रुत साहित्य प्रकाशन व अप्रकाशित साहित्य को प्रकाशित करने की भावना के अनुसार 108 पुस्तकों व प्रकाशन किया गया, जिनके विमोचन उपराष्ट्रपति नायडू ने पूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी के साथ किया । पूज्य स्वामीजी ने उन्हें पुस्तकें भी भेंट की । स्वामीजी ने कहा कि महामस्तकाभिषेक केवल जुलूस नहीं, उत्सव नहीं, पूजा नहीं यह जनकल्याण, शिक्षा, स्वस्कृतिव संस्कृति संवर्धन का कार्य भी है ।

सबसे ज्यादा दान देने वाला समाज है जैन समाज – राज्यपाल वजूभाई वाला : कर्नाटक राज्य के राज्यपाल वजूभाई वाला ने कहा कि त्याग में जो आनंद है उपभोग में नहीं है, यहां जितने भी साधु संत विराजमान है उन्होनें त्याग किया है इसीलिए हम दर्शन करने के लिए आते है । सबसे सुखी सम्पन्न लोग, सबसे ज्यादा सम्पत्ति वाले जैनधर्म के लोग हैं जो सबसे ज्यादा दान देने वाला समाज भी जैन समाज है । जितनी ताकत है उतने पैसे कमाइये, लेकिन समाज को समर्पित भी कीजिए ।

राणा प्रताप में ताकत थी, मामाशाह के पास सम्पत्ति दोनों का मिश्रण हुआ विजय मिली । क्षमा वीरस्य भूषणम बताते हुए उन्होनें कहा कि वीर ही क्षमा कर सकता है कमजोर नहीं । गीता में लिखा है कि जो धर्म विरुद्ध कार्य करे उसे समाप्त कर दें । श्री वजूभाई वाला ने जोरदार जयकार लगाकर भगवान बाहुबली की जय-जयकार लगाकर उपस्थितजनों से कराकर सबका मन मोह लिया ।

साधुओं की जितनी भक्ति करें कम है : पूज्य भट्टारक स्वामीजी पूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने कहा कि राज्याभिषेक बहुत पवित्र कार्य है । साधु संत यहां दो हजार किलोमीटर का पद विहार करके आए हैं, इनकी जितनी भक्ति हम करें कम हैं । सन् 1981, 1993, 2006 के महामस्तकाभिषेक का इतिहास बताते हुए स्वामीजी ने कहा कि संस्कृति संरक्षण के लिए कार्य करते हुए नायडू यहां तक पहुंचे है । समाज को ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है । केन्द्रीय मंत्री अनंतकुमार के बारे में उन्होनें कहा कि केन्द्र सरकार से आवश्यक सहयोग आमंत्रण देने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही

भारतीय संस्कृति का अनमोल रत्न जैन धर्म : राजनाथ

सुनील जैन 'संचय', ललितपुर । भगवान बाहुबली का 21वीं सदी का दूसरा महामस्तकाभिषेक के नवें दिन रविवार को भगवान बाहुबली के दर्शन केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने किए । इसके बाद आयोजित समारोह में सिंह ने कहा कि मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ कि जो आज मुझे भगवान बाहुबली के दर्शन करने का सौभाग्य मिला । भारतीय संस्कृति का अनमोल रत्न जैन धर्म है । हिंसा को पूर्णरूप से नकारता है सूक्ष्म रूप से भी हिंसा को नकारता वह जैन धर्म है।

उन्होनें कहा कि आज सभ्यताओं का भी द्वंद चल रहा है एक-दूसरे को हड़पने का सिलसिला चल रहा है । एक दूसरे पर स्थापत्य का दौर है । जैन धर्म की दार्शनिक अवधारणा से काफी हद तक इससे छुटकारा मिल सकता है जैन धर्म में मानव समाज के लिए जो विचार रखा है वह कल्याणकारी है । उन्होनें कहा कि चन्द्र गुप्त मौर्य जैन धर्म की अहमियत समझते थे। उनका राज्याभिषेक भी जैन पद्धति से किया गया था । गृहस्थ के चार आश्रम बताए गए हैं । ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और सन्यास आश्रम । चन्द्र गुप्त ने सन्यास आश्रम के लिए श्रवणबेलगोला चुना था । जहां पर भगवान बाहुबली की अद्भुत प्रतिमा बनी हुई है । ये भगवान बाहुबली की प्रतिमा भारत को ही नहीं विश्व को त्याग, समर्पण कर देने का संदेश देती है । जैन धर्म पूरी तरह वैज्ञानिक है । 12 वर्ष में भी महामस्तकाभिषेक होने का कारण है । सौर मंडल का मुख्य गृह बृहस्पति सूर्य का एक चक्कर लगाने में 12 वर्ष लगाता है । इसी कारण कुंभ आदि यह कार्य 12 वर्ष में होता है । इस अंक की भी अहमियत है । उन्होनें कहा कि जैन धर्म के मूल्य, अवधारणाएं हर मानव के लिए अनुकरणीय है । जैन मुनि कठिन तपस्या करते हैं । तपस्या जैन मुनि से सीखनी चाहिए ।

राजनाथ सिंह ने कहा कि अभी भगवान बाहुबली के दर्शन करने से मन पूरी तरह संतुष्ट नहीं हुआ है । दुबारा आने की कोशिश करूंगा और सीढ़ियों से चढ़कर भगवान बाहुबली का अभिषेक करूंगा तब इच्छा पूरी होगी । श्रवणबेलगोला मठ के भट्टारक चारूकीर्ति स्वामीजी ने कहा कि केंदीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह से कहा कि दूसरी पुरातात्विक विरासतों को जिस प्रकार की सुरक्षा केंद्र सरकार मुहैया करा रही है उसी प्रकार की सुरक्षा के लिए राज्य सरकार, श्रवणबेलगोला मठ की भी उसी प्रकार की सुरक्षा के इंतजाम किए जाएं । राजनाथ सिंह को अपनी संस्कृति पर गर्व है इसी कारण वह यहां आए हैं । वात्सल्य वारिधि वर्धमान सागरजी महाराज ने कहा कि अहिंसा से सुख की प्राप्ति होती है । भगवान बाहुबली का संदेश अहिंसा से सुख है इसकी पूर्ती के लिए श्रवणबेलगोला को अहिंसक क्षेत्र घोषित किया जाना चाहिए । इस मौके पर राजनाथ सिंह ने महामस्तकाभिषेक पुस्तक का विमोचन किया । राजनाथ सिंह का स्वागत भट्टारक चारूकीर्ति स्वामीजी ने रजत मंगल कलश प्रदान कर किया ।

मालवा में दिखा श्रवणबेलगोला सा नज़ारा –

सीमा जैन, इन्दौर । अखिल भारतीय पुलक जन चेतना मंच परिवार इंदौर एवम श्री भक्तामर अभ्युदय ट्रस्ट इंदौर के तत्वावधान में 84 दिन में नया इतिहास रचने वाले सर्वोदय तीर्थ भव्य श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव श्री बाहुबली भगवान महामस्तकाभिषेक ऐतिहासिक सफलता के साथ 18 फरवरी को सानन्द निर्विघ्न सम्पन्न हुआ । सर्वोदय तीर्थ पर सुबह से ही धर्मावलंबियों का आना शुरू हो गया हजारों समाजजन बाहुबली भगवान का महामस्तकाभिषेक देखकर धन्य हो गये आज इंदौर में श्रवणबेलगोला जी तीर्थ जैसा माहौल लग रहा था । आज अंतिम दिवस प्रात: मंत्राराधना जिनाभिषेक शांतिधारा नित्य नियम पूजन मोक्ष कल्याणक पूजन कैलाश पर्वत से मोक्ष गमन सिद्धत्य गुणारोपन हुआ समाज के प्रति समर्पित शिक्षा चिकित्सा में जरूरत मन्द समाजजनों को सहायता प्रदान करने वाले समाज श्रेष्ठी श्री एस के चित्रा जी जैन को अति विशिष्ट समाज सेवी के अलंकरण से अलंकृत किया गया । श्रद्धालुओं ने बारी बारी से अभिषेक किया गया । इस दौरान उपस्थित श्रद्धालु यह अद्भुत दृश्य देख भाव विभोर हो गये । महोत्सव के दौरान मुनिश्री शिवसागरजी महाराज ने कहा कि मनुष्य कर्मदाता है, मनुष्य ही कर्मविधाता है । उत्तर से लेकर दक्षिण तक पूरा भारत का जैन समाज बाहुबली मय हो गया है । दक्षिण में श्रवणबेलगोला जी महातीर्थ पर भगवान बाहुबली स्वामी का महामस्तकाभिषेक हो रहा है एवम उत्तर भारत में आज इंदौर शहर में बाहुबली भगवान का महामस्तकाभिषेक देखने का सौभाग्य समाजजनों को प्राप्त हुआ । इस अवसर पर समग्र समाज के जाने माने श्रेष्ठीजन उपस्थित थे । संगीतकार पंकज जैन की सुमधुर संगीत लहरियों से पूरा पांडाल झूम उठा । राष्ट्रीय जैन महिला जागृति मंच इंदौर की समस्त शाखाओं एवम श्री दिगम्बर जैन सोश्यल ग्रुप नेमिनाथ ने अतिथि सत्कार भोजन व्यवस्था में अविस्मरणीय सहयोग प्रदान किया ।

समाज को सही दिशा दिखाते हैं संत – प्रधानमंत्री

यह मेरा सौभाग्य है कि 12 साल में एक बार जो महापर्व होता है उसी कार्यकाल में प्रधानमंत्री के रूप में देश की सेवा करने का मेरे पास जुम्मा है और इसीलिए प्रधानमंत्री की जिम्मेदारी के तहत उसी कालखंड में मुझे इस पवित्र अवसर पर आप सबके आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि श्रवणबेलगोला के भगवान बाहुबली महामस्तिकाभिषेक के अवसर पर यहां इतने आचार्य भगवंत, मुनि और माताजी के एक साथ दर्शन प्राप्त करना, उनके आशीर्वाद प्राप्त करना ये अपने आप में एक बहुत बड़ा सौभाग्य है।

जब भारत सरकार के पास यहां के धार्मिक यात्रियों की सुविधा के लिए कुछ प्रस्ताव आए थे, वैसे कुछ व्यवस्था ऐसी होती है कि आईकोलॉजी सर्वे डिपार्टमेंट को कुछ चीजें करने में दिक्कत होती है। कुछ ऐसे कानून और नियम बने होते हैं। लेकिन इन सबके बावजूद भी भारत सरकार यहां पर आने वाले यात्रियों की सुविधा के लिए जितना भी कर सकती है जो-जो व्यवस्था खड़े करने की आवश्यकता होती है, उन सब में पूरी जिम्मेदारी के साथ अपना दायित्व निभाने का प्रयास किया है और यह हमारे लिए बहुत ही संतोष की बात है। आज मुझे एक अस्पताल के लोकार्पण का भी अवसर मिला। बहुत लोगों की मान्यता यह है कि हमारे देश में धार्मिक प्रवृत्तियां तो बहुत होती है लेकिन सामाजिक प्रवृत्तियां कम होती है ये परसेप्शन सही नहीं है। भारत के संत-महंत, आचार्य, मुनि, भगवंत सब कोई जहां है जिस रूप में है, समाज के लिए कुछ ना कुछ भला करने के लिए कार्यरत रहते हैं। आज भी हमारी ऐसी महान संत परंपरा रही है कि 20-25 किलोमीटर के फासले पर यदि कोई भूखा इंसान है तो हमारी संत-परंपरा की व्यवस्था ऐसी है कि कहीं ना कहीं उसको पेट भरने का प्रबंध किसी ना किसी संत द्वारा चलता रहता है, कई सामाजिक काम, शिक्षा के क्षेत्र में काम, आरोग्य के क्षेत्र में काम, व्यक्तियों को नशा से मुक्त करने के काम, अनेक प्रवृत्तियां हमारी इस महान परंपरा में आज भी हमारे ऋषि मुनियों द्वारा उतना ही अथक प्रयास से चल रहे हैं।

आज जब गोम्टेश थूदी की ओर में नजर कर रहा था तो मुझे लगा कि मैं आज उसे आपके सामने उद्धत करूं।

अच्छाय-सच्छं जलकंत-गंडं। आबाहु-दोलतं सुकण्णपासं ।।
गइंद-सुणडुज्जल-बाहुदण्डं। तं गोमटेसं पणमामि णिच्चं ।।

इसका मतलब होता है जिनकी देह आकाश के समान निर्मल है, जिनके कपोल जल के समान स्वच्छ हैं, जिनके कर्ण पल्लव स्कन्धों तक दोलायित हैं, जिनके दोनों उज्जवल भुजाएँ गजराज की सूंड के समान हैं, ऐसे उन गोमटेश स्वामी को मैं प्रतिदिन प्रणाम करता हूँ।

पूज्य स्वामी जी ने मुझ पर जितने आशीर्वाद बरसा सकते हैं, बरसाए। मेरी मां का भी स्मरण किया। मैं उनका बहुत-बहुत आभारी हूं इस आशीर्वाद को देने के लिए।

देश में समय बदलते हैं, समाज जीवन में बदलाव आने की परंपरा है। यह भारतीय समाज की विशेषता रहती है। समाज में जो कुरीतियां प्रवेश कर जाती हैं और कभी-कभी उसको आस्था का रुप दिया जाता है। यह हमारा सौभाग्य है कि हमारी समाज व्यवस्था में से ही ऐसे सिद्ध पुरुष पैदा होते हैं, ऐसे संत पुरुष पैदा होते हैं, ऐसे मुनि पैदा होते हैं, ऐसे आचार्य भगवंत पैदा होते हैं, जो उस समय समाज को सही दिशा दिखाते हैं। उससे मुक्ति पाकर के जीवन जीने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

हर 12 वर्ष में मिलने वाला यह एक प्रकार से कुंभ का ही अवसर है। यहां सब मिलकर के सामाजिक चिंतन करते हैं, समाज को आगे 12 साल के लिए कहां ले जाना है, समाज को उस रास्ता को छोडकर इस रास्ते पर चलना है, क्योंकि हर कोने से संघ का, मुनि भगवंत, आचार्य, सब माताजी वहां के क्षेत्र का अनुभव लेकर आते हैं, चिंतन मनन होता है, विचार-विमर्श होता है और उसमें से समाज के लिए अमृत रूप कुछ चीजें हम लोगों को प्रसाद के रूप में प्राप्त होती है और जिसको हम लोग जीवन में उतारने के लिए भरसक प्रयास करते हैं।

आज बदलते हुए युग में भी यहां एक अस्पताल का मुझे लोकार्पण करने का अवसर मिला। इतने बड़े अवसर के साथ एक बहुत बड़ा सामाजिक कार्य। आपने देखा होगा इस बजट में हमारी सरकार ने एक बहुत बड़ा कदम उठाया आयुष्मान भारत। इस योजना के तहत कोई भी गरीब परिवार, उसके परिवार पर बीमारी आ जाए तो सिर्फ एक व्यक्ति बीमार नहीं होता है एक प्रकार से उस परिवार की दो तीन पीढ़ी बीमार हो जाती है क्योंकि इतना आर्थिक खर्च हो जाता है कि बच्चे भी नहीं चुका पाते और पूरा परिवार तबाह हो जाता है। एक बीमारी पूरे परिवार को खा जाती है। ऐसे समय समाज और सरकार, हम सबका दायित्व बनता है कि ऐसे परिवार को संकट के समय हम उसका हाथ पकड़ें, उसकी चिंता करें और इसीलिए भारत सरकार ने 'आयुष्मान भारत योजना' के तहत एक साल में परिवार में कोई भी बीमार हो जाए, 1 वर्ष में रू. 5 लाख तक का उपचार का खर्चा, दवाई का खर्चा, ऑपरेशन का खर्चा, अस्पताल में रहने का खर्चा प्रबंध इंश्योरेंस के माध्यम से भारत सरकार करेगी। यह आजादी के बाद भारत में किया गया कदम पूरे विश्व में, पूरी दुनिया में सबसे बड़ा कदम है। इतना बड़ा कदम न कभी किसी ने उठाया है जो इस सरकार ने उठाया है। ये तभी संभव होता है कि जब हमारे शास्त्रों ने, हमारे ऋषियों ने, हमारे मुनियों ने उपदेश दिया- सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः और सर्वे सन्तु निरामयः इस संकल्प को पूरा करने के लिए एक-के-बाद एक कदम उठा रहे हैं।

इस अवसर पर पूज्य भट्टारक स्वस्ति श्री चारुकीर्ति जी स्वामी ने प्रधानमंत्री जी का अभिनन्दन किया। परम पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमान सागर जी महाराज ने प्रधानमंत्री को साहित्य प्रदान कर आशीर्वाद प्रदान किया। **संकलन – राजेन्द्र 'महावीर', सनावद**

वात्सल्यधारा आधार बैंक -

''एक बैंक जो पैसा नहीं, मरीजों को देता है मुफ्त मेडिकल उपकरण''

उपयोग खत्म होने के बाद मरीज इसे लौटा देते हैं, ताकि दूसरे मरीजों को मिल सके सुविधा

बैंक का नाम लेते ही पैसों का लेन-देन हमारी नजरों के सामने आ जाता है, लेकिन एक बैंक ऐसा भी हैं, जो दुर्घटना के कारण दिव्यांग या बीमार लोगों को 'मेडिकल कीट' देता है। वह भी पूरी तरह निःशुल्क। दो-तीन माह में ठीक होनें के बाद मरीज सामग्री बैंक को लौटा देता है, ताकि किसी जरूरतमंद के काम आ सके। इस अनोखे बैंक का नाम है 'वात्सल्यधारा आधार बैंक'। जैन मुनि पुलकसागर महाराज की प्रेरणा से देश का पहला 'वात्सल्यधारा आधार बैंक' सन् 2012 में नागपुर में खुला। बैंक का संचालन अखिल भारतीय पुलक जन चेतना मंच द्वारा किया जाता है। पिछले पांच साल में तीन हजार से अधिक लोग मेडिकल किट का लाभ उठा चुके हैं।

वात्सल्यधारा आधार बैंक के पास 10 व्हीलचेयर, 15 वॉकर, 4 मेडिकल बेड, 6 कमोड स्टूल, 10 एयरबेग तथा अन्य सामग्री है। सबसे ज्यादा मांग व्हीलचेयर, वॉकर, मेडिकल बेड और एयरबेग की होती है। घर पहुंच सुविधा भी प्रदान की जाती है।

व्हीलचेयर कारगर : व्हीलचेयर का लाभ वृद्ध मरीज उठा रहे हैं। मरीजों के लिए धूप सेंकना अनिवार्य है। वृद्ध मरीजों को घर से बाहर धूप में ले जाने के लिए व्हीलचेयर कारगर साबित हो रहा है। कई वृद्ध तीर्थयात्रा पर भी जा चुके है। **अस्पताल करते हैं संपर्क :** मेडिकल सहित अन्य अस्पताल वाले भी 'वात्सल्यधारा आधार बैंक' में मेडिकल कीट के लिए संपर्क कर रहे हैं। आर्थोपेडिक विभाग वाले गरीब मरीजों को बैंक का नंबर देते हैं। जिन्हें आवश्यक सामग्री उपलब्ध करा दी जाती है। **सभी के लिए खुले हैं बैंक के द्वार :** 'वात्सल्यधारा आधार बैंक' के संयोजक मनोज बंड ने बताया कि बैंक द्वारा सामग्री सिर्फ जैन समाज के लिए नहीं, बल्कि हर जाति-धर्म के लोगों को सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। बैंक खुलने पर संस्था ने लोगों को आह्वान किया कि यदि आपके पास सामान हो, तो बैंक में जमा कराएं और जरूरत पड़ने पर लेकर जाएं। कुछ लोगों ने अपने घर से सामान लाकर दिया। कई लोगों ने अपने जन्मदिन पर सामग्री दान की। कुछ दिनों से डिपॉजिट ली जा रही है, लेकिन सामग्री वापस करने पर पूरी रकम लौटाई जाती है। मेरा हर नगर के जैन समाज से सादर निवेदन है कि वे इसी प्रकार का वात्सल्य धारा आधार बैंक प्रारंभ करें।

बरुआसगर के जैन विद्यालय को मिला अल्पसंख्यक का दर्जा

राजेश जैन, झांसी। गत 85 वर्षों से निरंतर चल रहे श्री पारसनाथ दिगंबर जैन संस्कृत विद्यालय बरुआसागर जनपद झांसी को भारत सरकार के अल्पसंख्यक विद्यालय शैक्षणिक आयोग ने अल्पसंख्यक का दर्जा प्रदान कर दिया है। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था आयोग में न्यायमूर्ति श्री बलजीत सिंह मान एवं न्यायमूर्ति नाहिद आबदी की खंडपीठ ने न्यायालय में विद्यालय के प्रबंधक श्री संजय जैन चौधरी और अध्यक्ष श्री प्रवीण जैन झांसी की याचिका पर सुनवाई के बाद यह फैसला सुनाया। पिछले दिनों भारत सरकार के अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था आयोग में डिप्टी सेक्रेटरी श्री संदीप जैन ने नई दिल्ली स्थित अपने कार्यालय में विद्यालय के प्रबंधक श्री संजय जैन चौधरी और अध्यक्ष श्री प्रवीण जैन को विद्यालय की अल्पसंख्यक मान्यता संबंधी प्रमाण पत्र प्रदान किया। इस उपलब्धि पर विद्यालय परिवार और बरुआसागर जैन समाज ने हर्ष व्यक्त किया है। स्थानीय समाज के साथ श्री प्रवीण जैन 'दैनिक विश्व परिवार' के अथक प्रयासों से यह उपलब्धि प्राप्त हो पायी है। उल्लेखनीय है कि श्री पारसनाथ दिगंबर जैन संस्कृत विद्यालय बरुआसागर की स्थापना वर्ष 1933 में पूज्यपाद श्री गणेश प्रसाद वर्णी जी की प्रेरणा से बरुआसागर की स्थानीय एवं बुंदेलखंड की जैन समाज के द्वारा की गई थी। वर्ष 1948 में श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा के समक्ष श्री वर्णी जी ने दीक्षा भी ली थी। यहां पर विद्यालय के साथ जैन समुदाय के छात्रों को एक निःशुल्क छात्रावास का संचालन जैन समाज के सहयोग से निरंतर हो रहा है। यह विद्यालय परिसर पूज्य वर्णी जी की धर्म साधना स्थली भी रहा है। वर्तमान में विद्यालय परम पूज्य मुनि श्री सुधा सागर जी महाराज के आशीर्वाद से निरंतर प्रगति कर रहा है।

गोलालारीय दर्शन समाज के 4500 परिवारों तक नियमित भेजा जा रहा है। संभव है डाक व्यवस्था या आपका पता सही न होने के कारण पत्रिका आपको व आपके रिश्तेदारों तक पत्रिका नहीं पहुंचती है तो उनका नाम व पता पोस्टकार्ड पर लिखकर पत्रिका कार्यालय पर भेज देवें या 9424013136 पर दोप. 4 से रात्रि 10 तक संपर्क कर सकते है या अपने पता का एसएमएस कर सकते है।

तीन लोक के नाथ कैसे बनते हैं: मुनि पूज्यसागर महाराज

विनोद बैरागी, बबीना । नगर में 163 वर्षों के बाद श्री 1008 आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का शंखनाद संत शिरोमणी आचार्य श्री 108 सुधा सागर जी महाराज मुनि श्री 108 आध्यात्मिक संत सुव्रत सागर जी महाराज के पूर्ण आशीर्वाद से मुनि श्री प्रशान्त सागर जी महाराज के मंगल सानिध्य में आयोजन होगा गजरथ एवं विश्वशांति महायज्ञ का आयोजन 4 मार्च से 9 मार्च तक बड़ा तालाब के सामने रामलीला मैदान में आयोजित किया गया । जिसकी तैयारियाँ बड़े स्तर पर की जा रही है । इस दौरान संपूर्ण जैन समाज के प्रतिष्ठान बन्द रखने का प्रस्ताव रखा गया, जिसे समाज द्वारा सहर्ष स्वीकार किया गया । श्री 1008 पार्श्वनाथ जैन मन्दिर पर विशाल धर्म सभा को संबोधित करते हुए मुनि श्री 108 पूज्य सागरजी महाराज ने अपने धर्मामृत वचनों में कहा आप लोगों ने रंगों की होली बहुत खेली होगी, अब तो धर्म की होली खेलो फिर देखो कितना महत्वूपर्ण दिन होगा जब तीन लोक के नाथ कैसे बनते हैं । पाषाण को भगवान बनाने में सम्यकदर्शन प्राप्त हो जाता है । अपने वचनों को नाप तौल कर बोलो एक शब्द के कारण सीता माता को घर से जाना पड़ा, मर्यादा पुरूषोत्तम राम थे तब मर्यादा थी भगवान राम ने सीता माता का त्याग कर दिया । आज पंचम काल है कोई भी गड़ बड़ कर सकता है । भांति भांति के लोग है, इन सबको एक बनाना है, नेक बनाना है । सभी का सहयोग करना है जैसे श्रीराम को लंका जाना था तब पुल बनाना था । तब एक गिलहरी ने भी सहयोग । आज तक गिलहरी का नाम है । जैसे घड़ा बनाना है मिट्टी को ठोकना पीटना पडता है तब वह घड़ा बनता है इसी प्रकार फसल बोने से पहले किसान हल जोतता है जमीन तैयार करता है फिर बीज बोता है तब फसल आती है।

राजा श्रेयांस के यहां भगवान आदिनाथ को जन्म लेना था तो सोलह स्वप्न दिखाई दिये थे, जिसका फल आप सभी को पंचकल्याणक में देखने को मिलेगा । जिन्होंने साधना, तप, त्याग, तपस्या की है उसी का नाम पंचकल्याणक में आपने अपने धन को सद्उपयोग किया है तो आप धन्य हो जायेंगे । धर्म सभा का मंगलचरण नीता दीदी ललितपुर द्वारा किया गया संचालन महावीर जैन ने किया । इस मौके पर धर्मसभा के अध्यक्ष जैन समाज सिंघई महेन्द्र जैन सहित अनेक श्रेष्ठीजन मौजूद रहे ।

एक विवाह ऐसा भी...

श्री बाहुबली बहुउद्देशीय संस्था नागपुर के वरिष्ठ सदस्यों के प्रयास से सिर्फ दो दिवस में विवाह समारोह सादगीपूर्ण सम्पन्न । दिनांक 10 नवम्बर को नागपुर और इंदौर से अपने पूरे परिवार के साथ महावीरजी की यात्रा का उद्देश्य लेकर रवाना हुए, संस्था अध्यक्ष श्री अनिल जी VSR ने महावीरजी निवासरत श्री सुरेंद्र कुमार जी जैन की पुत्री के संबंध हेतु संस्था के वरिष्ठ सदस्य श्री नेमीचंदजी को श्री अनिलजी VSR ने चर्चा में बताया कि आपका भतीजा अर्पित जैन इंदौर में हैं हम उसके लिए महावीरजी में ही बच्ची देख लेंगे और यदि बच्ची पसंद आती है तो सगाई भी कर देंगे । श्री अनिलजी ने नेमीचंद जी से कहा कि क्यों ना एक कदम और बढ़ाया जाए यदि सारी चीजें ठीक-ठाक रहती है तो क्यों ना शादी ही कर ली जाए इस प्रस्ताव को नेमीचंद जी ने अपने परिवार से चर्चा के उपरांत स्वीकार किया और जो कार्यक्रम बच्ची देखने अथवा सगाई करने तक सीमित था उसी कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए विवाह समारोह में बदल दिया । सर्वप्रथम महावीरजी पहुंचने के बाद श्री सुरेंद कुमार जी की बड़ी बेटी चंचल को पूरे परिवार ने पसंद करते हुए दिनांक 11 नवम्बर को सगाई की रस्म पूरी की और अगले दिन महावीरजी क्षेत्र में ही शादी की सारी रस्में संम्पन्न हुई । इस विवाह समारोह में दोनों पक्षों के सभी रिश्तेदार बड़े उत्साह पूर्वक शामिल हुए और सिर्फ एक फोन पर ही सभी रिश्तेदारों ने रिजर्वेशन ना होते हुए भी अपनी उपस्थिति दर्ज कर नव दंपत्ति को आशीर्वाद देते हुए श्री सुरेंद कुमार जी को धन्यवाद दिया कि आपके कारण ही श्री महावीरजी की वंदना भी हो गई । यह अपने समाज के लिए एक अद्वितीय उदाहरण है । समाज के सभी सदस्य इस तरह से सोचे और शादी समारोह के इतने लंबे और खर्चीले कार्यक्रम को सीमित रूप से करें तो सभी का समय एवं पैसा दोनों की बचत संभव हो सकती है । श्री दिगंबर जैन बाहुबली बहुउद्देशीय संस्था के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ सदस्य बधाई के पात्र हैं ।

स्वर्णिम अवसर IAS, IPS, IRS बनने के लिए .....

प्रतिभाशाली ग्रेजुएट जैन छात्र-छात्राओं के लिए केंद्रीय लोक सेवा संघ एवं राज्य लोक सेवा द्वारा आयोजित परीक्षाओं की तैयारी हेतु JITO-JATF द्वारा रियायती दर पर कोचिंग, मार्गदर्शन, भोजन, आवास तथा पुस्तकालय की सुविधा उपलब्ध है इसमें सीटें सीमित है । ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन के लिए वेबसाइट www.jatfadmission.org रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि 31-03-2018 !! प्रवेश परीक्षा की तिथि 15-04-2018

Bank Probationary officers(Asstt. Branch Manager) बनने के लिए स्वर्णिम अवसर-प्रतिभाशाली ग्रेजुएट जैन छात्र-छात्राओं के लिए Bank PO की परीक्षा की तैयारी हेतु ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन के लिए वेबसाइट www.jatfadmission.org रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि 15-04-2018 प्रवेश परीक्षा की तिथि 29-04-2018

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें 011-69000081/82/83

or www.jatf.in पर देखें

हार्दिक बधाई

यूएसए की नेल्सन बुक द्वारा जारी सूची में योग कैटेगरी में पहले स्थान पर रही 'संपूर्ण योग विद्या' – शहर के योग पुस्तकों के लेखक राजीव जैन

त्रिलोक की पुस्तक 'संपूर्ण योग विद्या' को माइंड, बॉडी एंड स्प्रिचुअलिटी कैटेगरी में भारत में नंबर एक बुक का खिताब मिला है । यूएसए की नेल्सन बुक द्वारा हर साल यह सूची जारी की जाती है, जिसमें हर देश की टॉप 5000 किताबों की लिस्टिंग जारी की जाती है । इसमें अलग-अलग कैटेगरी होती है ।

राजीवजी ने बताया कि साल 2010 में इस पुस्तक को राजभाषा पुस्तक सम्मान, रक्षा मंत्रालय द्वारा दिया गया था । इस पुस्तक की अप्रेल 2017 से लेकर दिसंबर 2017 तक देशभर में 8000 किताबें बिक चुकी हैं, यही वजह रही कि यह पुस्तक नंबर-1 के खिताब से नवाजी गई है । इस पुस्तक में योग के अलावा आसनों को करने के वैज्ञानिक कारण भी दिए गए हैं । किन बीमारियों में कौन सा योग करना है या नहीं यह तमाम जानकारियां भी इसमें समाहित की गई है ।

तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागर पुरस्कार से डॉ. श्रेयांस जैन बड़ोत को राज्यपाल ने किया सम्मानित – चण्डीगढ़ । अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्री परिषद के अध्यक्ष, देश के मूर्धन्य विद्वान डॉक्टर श्रेयांस कुमारजी जैन बड़ौत को 24 जनवरी 2018 को चंडीगढ़ (पंजाब) में परम पूज्य आचार्य श्री सुंदर सागर जी महाराज के परम सानिध्य में हरियाणा के राज्यपाल महामहिम प्रोफेसर कप्तान सिंह सोलंकी जी ने अपने कर कमलों से "**तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मति सागर पुरस्कार**" से सम्मानित किया । इस अवसर पर आचार्य श्री सुंदर सागर जी महाराज ने अपने आशीष वचन में डॉक्टर श्रेयांस कुमारजी बडौत द्वारा जैन संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के लिए दिए जा रहे अवदान का उल्लेख किया और उन्हें मूर्धन्य जैन मनीषी बताया ।

नित्यता ने नेशनल चैंपियन को हराया – इंदौर । भुवनेश्वर में चल रही नेशनल स्कूल चेस चैंपियनशिप में इंदौर की 14 वर्षीय 1845 अंतराष्ट्रीय फिडे रेटिंग प्राप्त शतरंज खिलाड़ी नित्यता जैन ने अंडर 15 बालिका वर्ग के छठे राउंड में सफेद मोहरों से खेलते हुए 2017 की नेशनल अंडर 13 बालिका शतरंज चैंपियन ज्योत्सना एल. को हराया । ज्योत्सना नित्यता से एवं अंतराष्ट्रीय रेटिंग में 100 पॉइंट्स आगे है और इस चैंपियनशिप में टॉप सीडेड है । इसके पूर्व इसी खिलाड़ी से विगत नेशनल्स में नित्यता 2-3 बार हार चुकी है, लेकिन पूर्व में हुई गलतियों से सबक लेकर उसने इस बार उसने अच्छी तैयारी कर ओपनिंग से ही अपनी पोजीशन अच्छी कर ली थी, जिसके कारण ज्योत्सना ने 3 बार नित्यता को ड्रॉ ऑफर किया जिसे नित्यता ने ठुकराते हुए खेल जारी रखा और जीत हासिल की ।

हाल ही दिल्ली में संपन्न खेलो इंडिया समारोह में कु. एनी जैन को तैराकी में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए केन्द्रीय खेल मंत्री श्री राजवर्धन सिंह ने सम्मान किया ।

कुन्द कुन्द ज्ञानपीठ पुरस्कार वर्ष 2015 के लिए निर्देशक मंडल के ए.ए. अब्बासी की अध्यक्षता में गठित 5 सदस्यीय निर्णायक मंडल की अनुशंसा के आधार पर समाज गौरव पं. लालचंदजी जैन 'राकेश', भोपाल को उनकी कृति 'सदलगा के संत एवं अन्य 31 कृतियों के लिए कुन्द कुन्द ज्ञान पीठ पुरस्कार प्रदान की घोषणा की गयी है । इस पुरस्कार के अंतर्गत नगद राशि, शाल, श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है।

आशीष का हुआ सम्मान – दिनांक 10 से 14 जनवरी तक पुणे के डेक्कन कॉलेज में तृतीय विश्व वेद एवं विज्ञान सम्मेलन का आयोजन हुआ इस कार्यक्रम के प्रमुख आयोजक - महाराष्ट्र सरकार, विज्ञान भारती पुणे, युनिवर्सिटी पुणे एवं डेक्कन यूनिवर्सिटी पुणे थी । इस आयोजन में नागपुर के आशीष प्रकाशचंद्र जैन का श्री भूवलयग्रंथ पर अपना प्रस्तुतीकरण दिया । पहले राउंड में लाइव प्रेजेंटेशन दूसरे राउंड में पॉवर पाइंट प्रेजेंटेशन और तीसरे राउंड में पोस्टर प्रजेंटेशन हुआ तीनो ही राउंड में निर्णायकों ने आशीष की प्रेजेंटेशन की सराहना की इस कार्यक्रम में परम सुपर कम्प्यूटर के जनक श्री विजय जी भटकर भी उपस्थित थे उन्होनें आशीष से लगभग 1 घंटे चर्चा की और नालंदा यूनिवर्सिटी में आगे की शोध के लिए आमंत्रित कर हर तरह के सहयोग का आश्वासन दिया । श्री भूवलय एक जैन ग्रंथ है किसकी रचना कन्नड़ भाषा में आचार्य कुंमदेन्दु ने की इस ग्रंथ राज में 720 लघु भाषाएं और 20 मुख्य भाषाओं का रूपांतरण करने की विधि है जो कि आज के समय में बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी लगभग 250 ग्रंथों का अलग अलग धर्मों से प्रस्तुतिकरण हुआ जिस में एकमात्र जैन ग्रंथ की प्रस्तुति आशीष जैन ने की और अजैन समाज में यह संदेश गया कि जैन धर्म बहुत ही प्राचीन है क्योंकि इस ग्रंथ की रचना सातवीं सदी में हुई है जबकि अजैन समाज जैन धर्म को भगवान महावीर के समय से अथवा बौद्ध धर्म के समकालीन मानती थी यह शंका वहां उपस्थित लोगों की दूर हो गई और उपस्थित जनमानस ने जैन धर्म के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर आशीष जैन का आभार व्यक्त किया । संकलन - प्रकाशचंद जैन,

25वीं विवाह वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनाएँ

श्री राजीव-डॉ. रेखा जैन, भोपाल

ऋषभवेद जयंती, 11 मार्च 2018 के अवसर पर प्रासंगिक आलेख-

आज अधिक प्रासंगिक हैं तीर्थंकर ऋषभदेव की शिक्षाएं

प्रतिवर्ष चैत्रकृष्ण नवमी को ऋषभ जयंती समुदाय में हर्ष, उल्लास के साथ श्रद्धा पूर्वक मनायी जाती है । इस दिन जैनधर्म के आदि प्रवर्तक तीर्थंकर ऋषभदेव (आदिनाथ) का जन्म हुआ था । चौदहवे कुलकर नाभिराय राजा और उनकी पत्नी मरूदेवी से चैत्रकृष्ण नवमी के दिन मति, श्रुत और अवधिज्ञान के धारक पुत्र का जन्म अयोध्या में हुआ था । इन्द्रों ने बालक का समेरू पर्वत पर अभिषेक महोत्सव करके 'ऋषभ' नाम रखा । जैन परम्परा में मान्य चौबीस तीर्थंकरों की श्रृंखला में भगवान ऋषभदेव का नाम प्रथम स्थान पर एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हैं । विश्व के प्राचीनतम लिपिबद्ध धर्म ग्रंथों में से एक वेद में तथा श्रीमद्भगवत इत्यादि में आये भगवान ऋषभदेव के उल्लेख तथा विश्व की लगभग समस्त संस्कृतियों में ऋषभदेव की किसी न किसी रूप में उपस्थिति जैनधर्म की प्राचीनता और भगवान ऋषभदेव की सर्वमान्य स्थिति को व्यक्त करती है । जैन परंपरा के अनुसार तीर्थंकर आदिनाथ प्रथम तीर्थंकर हैं, जिन्होनें मानव जाति को पुरूषार्थ का उपदेश दिया । अपने जीवन निर्माण के लिए, परिवार, राष्ट्र के लिए उन्होनें कर्म का उपदेश दिया । मानव जाति से उन्होनें कहा कि- तुम पुरूषार्थ के द्वारा अपनी समस्याओं को हल कर सकते हो, इस दृष्टि से विभिन्न कलाओं का निरूपण किया । साम्राज्य का भी त्याग किया, तप, त्याग के द्वारा कैवल्य प्राप्त किया । वीतराग, निराकार हो गये । धर्म के उपदेश द्वारा समाज का सृजन किया । परमात्मा के रूप में **'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय', 'सर्वे भविन्तु सुखिनः'** को साकार करते रहे ।

भगवान आदिनाथ के बारे में श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए भारत के राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने कहा था- ''मैनें विश्व के तथा अपने देश के करीब-करीब सभी धर्मों का थोड़ा बहुत अध्ययन किया है । जैन धर्म की अनेक सैद्धांतिक और व्यवहारिक बातों ने मुझे प्रभावित किया है । जैनधर्म के प्रवर्तक भगवान ऋषभदेव की यह प्रतिमा दिखाई दे रही है, इसे मैं कई अर्थों में जैन सिद्धांतों का प्रतीक मानता हूँ। इस प्रतिमा की विशालता, अपने शाश्वत और भव्य स्वरूप में उपदेश दे रही है, हमें अपने हृदय को इतना विशाल बनाना है संकीर्ण विचारों स्वार्थ लिप्सा की वृत्ति से ऊपर उठकर उदात्त बनाना है । श्री मद्भागवत के पांचवे स्कंध में अध्याय 2 से 6 में ऋषभदेव का वर्णन मिलता है । इसमें अपने पुत्रों को दिये उनके उपदेश का उल्लेख है । यह गौरव की बात है कि इन्हीं प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम से इस देश का नामकरण 'भारतवर्ष' इन्हीं की प्रसिद्धि के कारण विख्यात हुआ । इतना ही नहीं, अपितु कुछ विद्वान भी संभवत: इस तथ्य से अपरिचित होंगे कि आर्यखण्ड रूप इस भारतवर्ष का एक प्राचीन नाम नाभिखण्ड 'अजनाभवर्ष' भी इन्हीं ऋषभदेव के पिता 'नाभिराय' के नाम से प्रसिद्ध था । ये नाभि और कोई नहीं, अपितु स्वायुंभव मनु के पुत्र प्रियव्रत और प्रियव्रत के पुत्र नाभि थे । नाभिराय का एक नाम 'अजनाभ' भी था । स्कंधपुराण में कहा है- 'हिमाद्रिजलधरेन्तर्नाभिखण्डमिति स्मतम' - 1/2/37/55 । उल्लेखनीय है । हाल ही में कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में जो गोमटेश्वर बाहुबली भगवान का महामस्तकाभिषेक का विशाल आयोजन हुआ जिसका शुभारंभ महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने किया, वह बाहुबली और कोई नहीं तीर्थंकर ऋषभदेव के ही पुत्र थे । जैनधर्म के प्रवर्तक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव इस विश्व के लिए उज्जवल प्रकाश हैं । उन्होनें कर्मों पर विजय प्राप्त कर दुनिया को त्याग का मार्ग बताया । भगवान ऋषभदेव की शिक्षाएं मानवता के कल्याण के लिए हैं, उनके उपदेश आज भी समाज के विघटन, शोषण, साम्प्रदायिक विद्वेष एवं पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में सक्षम एवं प्रासंगिक हैं ।

भारतीय संस्कृति के प्रणेता एवं जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की जनकल्याणकारी शिक्षा द्वारा प्रतिपादित जीवन-शैली, आज के चुनौती भरे माहौल में उनके सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों की प्रासंगिकता है । तीर्थंकर ऋषभदेव अध्यात्म विद्या के भी जनक रहे हैं ।

सामाजिक संरचना में उन्होनें प्रजाजनों को तीन श्रेणियों में विभाजित करते हुए उनको अपने अपने कर्त्तव्य, अधिकार तथा उपलब्धियों के बारे में प्रथम मार्गदर्शन किया । सर्वांगीण विकास के मूल आधारभूत तत्वों का विवेचन कर वास्तविक समाजवादी व्यवस्था का बोध कराया । प्रत्येक वर्ण व्यवस्था में पूर्ण सामंजस्य निर्मित करने हेतु तथा उनके निर्वाह के लिए आवश्यक मार्गदर्शक सिद्धांत, प्रतिपादन करते हुए स्वयं उसका प्रयोग या निर्माण करके प्रात्याक्षिक भी किया । अश्व परीक्षा, आयुध निर्माण, रत्न परीक्षा, पशु पालन आदि बहत्तर कलाओं का ज्ञान प्रदर्शित किया । उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षाओं का वर्गीकरण कुछ इस प्रकार से किया जा सकता है-

1. असि-शस्त्र विद्या, 2. मसि-पशुपालन, 3. कृषि-खेती, वृक्ष, लता वेली, आयुर्वेद, 4. विद्या- पढ़ना, लिखना, 5. वाणिज्य-व्यापार-व्यवसाय 6. शिल्प- सभी प्रकार के कल्याणकारी कार्य ।

जैन परंपरा के अनुसार तीर्थंकर ऋषभदेव ने कृषि का सूत्रपात किया । अनेकानेक शिल्पों की अवधारणा की । कृषि और उद्योग में अद्भुत सामंजस्य स्थापित किया कि धरती पर स्वर्ग उतर आया । कर्मयोग की वह रसधारा बही कि उजड़ते और वीरान होते जन जीवन में सब ओर नव बसंत खिल उठा । जनता ने उन्हें अपना स्वामी माना और धीरे-धीरे बदलते हुए समय के अनुसार वर्ण व्यवस्था, दण्ड व्यवस्था, विवाह आदि सामाजिक व्यवस्था का निर्माण हुआ ।

ऋषभदेव ने महिला साक्षरता तथा स्त्री समानता पर भी महत्वपूर्ण कार्य किया है । अपनी दोनों पुत्रियों को ब्राही को अक्षर ज्ञान के साथ-साथ व्याकरण, छंद, अलंकार, रूपक, उपमा आदि के साथ स्त्रियोचित अनेक गुणों के ज्ञान से अलंकृत किया । लिपि विद्या को ऋषभदेव ने विशेष रूप से ब्राह्मी को सिखाया। इसी के आधार पर उस लिपि का नाम ब्राह्मी लिपी पड़ गया । ब्राह्मी लिपी विश्व की आद्य लिपी है । दूसरी पुत्री सुंदरी को अंकगणतीय ज्ञान से पुरस्कृत किया । आज भी उनके द्वार निर्मित व्याकरणशास्त्र तथा गणितिय सिद्धांतों ने महानतम ग्रंथों में स्थान प्राप्त किया है । आज जब भारत सरकार बेटी पढ़ाओ, बेटी बढ़ाओ का अभियान चला रही है, ऐसे में ऋषभदेव द्वारा अपनी पुत्रियों को दी गयी शिक्षा और अधिक प्रासंगिक हो जाती है । उनके द्वारा दी गयी बेटियों के शिक्षा संदेश को यदि अमल में लाया जाय तो इस अभियान में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलेंगे । प्रशासनिक कार्य में इस भारत भूमि को उन्होनें राज्य, नगर, खेट, कर्वट, मटम्ब द्रोण मुख तथा संवाहन में विभाजित कर सुयोग्य प्रशासनिक, न्यायिक अधिकारों से युक्त राजा, माण्डलिक, किलेदार, नगर प्रमुख आदि के सुपुर्द किया । आपने आदर्श दण्ड संहिता का भी प्रावधान कुशलता पूर्वक किया । -डॉ. सुनील जैन 'संचय'

महावीर जयंती पर विशेष - विश्ववंद्य पतित उद्धारक

''स्यादवादो वर्त्तते यस्मिन पक्षपातो न विद्यते ।
नास्तन्य पिड़िन किंचते जैन धर्मः स उच्चते ।।''

अर्थात् जिसकी वाणी में स्यादवाद है, जो किसी के साथ पक्षपात नहीं करता, साथ ही जहां किसी को पीड़ा न पहुंचाने की बात है वह जैन धर्म है ।

भारतवर्ष वह तपोभूमि है जिसने अनेकों ऋषियों मनिषियों, संतों एवं महामानवों को जन्म दिया है जिन्होनें स्वार्थ, लोभ, अराजकता और हिंसा में झुलसते समाज को समय-समय पर उचित मार्गनिर्देश दिया है । वर्तमान युग लगभग उन्हीं परिस्थितियों एवं वातावरण से गुजर रहा है जैसा कि छठि शताब्दी में था अर्थात् देश में असत्य का बोलबाला था, चारों ओर हिंसा व्याप्त थी, धर्म के नाम पर कर्मकांड और पाखंड व्याप्त था । संसार में व्याप्त तृष्णा, अनीति एवं हिंसा में झुलसते समाज के लिए एक ऐसे महापुरुष की आवश्यकता थी जो अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, अनेकांतवाद के आलोक में लोगों के हृदय अंधकार को दूर कर सके । ठीक ऐसे ही समय आज से 2600 वर्ष पूर्व कुंडलपुर नगर के राजा सिद्धार्थ के घर भगवान महावीर का जन्म हुआ । वे जन्मत: स्वस्थ, सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व वाले थे । डरना तो उन्होनें सीखा ही नहीं था, वे साहस के पुतले थे। अत: उन्हें बचपन से ही वर्धमान, वीर, अतिवीर, सन्मति, तीर्थंकर आदि नाम से पुकारते थे । बाल्यकाल से ही उनके घर में धन-धान्य की अत्यधिक वृद्धि हुई थी । अत: माता-पिता ने उनका नाम वर्धमान रखा । आत्मज्ञानी होने से उन्हें सन्मति कहते थे । संसार समुद्र और स्व-पर के तरण तारण होने से उन्हें तीर्थंकर कहते थे । बाल्यकाल से ही उन्होनें अपनी प्रवृत्तियों को परिष्कृत एवं परिमार्जित करने का प्रयास किया । वे आत्मज्ञानी, विचारवान एवं विवेकी थे । महावीर ने लोक जीवन में व्याप्त बुराइयों का अध्ययन किया । भगवान महावीर ऐसे समाज की रचना करना चाहते थे जहां किसी प्रकार का भेदभाव न हो, मानव मात्र समान हों, सभी को जीने का अधिकार हों । भगवान महावीर ने अपने उपदेशों में अहिंसा को प्रथम स्थान दिया । महावीर के इसी अहिंसा के बल पर महात्मा गांधी ने भारत जैसे विशाल देश को अंग्रेजों के अत्याचार से मुक्ति दिलायी थी । वर्तमान युग में बढ़ते हुए आतंकवाद, उग्रवाद एवं हिंसा से बढ़ते हुए खतरों से बचने के लिये आज भगवान महावीर के अहिंसा और स्यादवाद की अत्यंत आवश्यकता हैं । अहिंसा से आचार शुद्धि और स्यादवाद से विचार शुद्धि बताई गई हैं अर्थात् जिसका आचार विचार जितना शुद्ध होगा उतना ही वह अनात्मा से आत्मा की ओर एवं परमात्मा की ओर बढ़ेगा ।

भगवान महावीर का धर्म सर्वोदय तीर्थ कहलाया क्योंकि यहाँ सभी प्राणियों को संसार सागर से संतरण करने का मार्ग दर्शाया गया है । वर्तमान में भगवान महावीर के सभी सिद्धांत - * अहिंसा परमोधर्म * जियो और जीने दो, * परस्परोपग्रहो जीवानाम्, * मित्तीमेसव्वभूएसु । अर्थात संसार के सभी प्राणी मेरे मित्र है । विशुद्ध नैतिक धर्म मय जीवन के लिए एवं समस्त विभिषिकाओं से बचने के लिए सार्थक है ।

भगवान महावीर की देन 'अनेकांतवाद' से वैचारिक वैमनस्य दूर होगा । इसी तरह अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह से कई समस्याओं का समाधान होगा । भगवान महावीर ने पर्यावरण सुरक्षा के भी निर्देश दिये थे । आज विश्व में आण्विक एवं रासायनिक शस्त्रों की होड़ सी हो रही है, जो घातक है । भगवान महावीर ने इस बात को पहले ही समझ लिया था । उन्होने कहा ''शास्त्रों में एक से बढ़कर एक हो सकते है पर अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर और कुछ नहीं हैं ।''

भगवान महावीर के सभी सिद्धांतों की वैज्ञानिक युग में संपुष्टि हो रही है, आज आवश्यकता है उसके चिन्तन और मनन की । आज के पदार्थवादी युग में और तनावग्रस्त जीवन में मानव यदि सुख से जीना चाहता है तो आवश्यकता है कि भगवान महावीर की वाणी एवं उनका दर्शन व्यक्ति के जीवन का पाथेय हो । भगवान महावीर के जन्मदिन को मनाने और उनके प्रति अपनी आस्था समर्पित करने की सार्थकता उनके उपदेशों को आत्मसात करने में है । भारतीय मानसिकता ऐसे महापुरूषों के प्रति सहज भाव से श्रद्धाशील है ।

''विश्ववंद्य, पतित उद्धारक,
अहिंसा के अवतार भगवान महावीर की जय।''

- डॉ. प्रतिभा जैन (भाचावत), इन्दौर

आचार्य विद्यासागरजी की ब्रह्मचर्य स्थली श्रवणबेलगोला में संयम कीर्ति स्तम्भ का लोकार्पण

आचार्य वर्द्धमानसागरजी सहित अनेक आचार्य व शताधिक पिच्छीधारी रहे उपस्थित ।

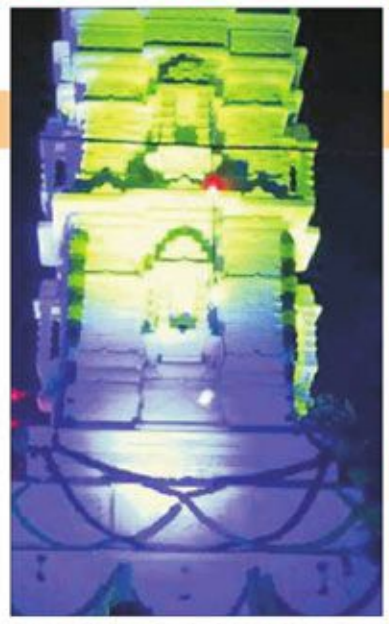

राजेन्द्र जैन 'बागो', इन्दौर । संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के संयम स्वर्ण जयंती वर्ष के अंतर्गत विश्व तीर्थ श्रवणबेलगोला के चन्द्रगिरि पहाड़ की तलहटी में विशाल 25 फीट उत्तुंग संयम स्वर्ण जयंती कीर्ति स्तम्भ का लोकार्पण सम्पन्न हुआ । राष्ट्रगौरव वात्सल्यवारिधि आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी महाराज सहित अनेक आचार्य-मुनिराज आर्यिका माताजी के सान्निध्य व जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी के नेतृत्व में श्रायक श्रेष्ठी श्री अशोक-सुशीला पाटनी आर.के. मार्बल लिमिटेड किशनगढ़, महोत्सव की राष्ट्रीय अध्यक्षा सरिता एम.के.जैन सहित अनेक गणमान्य श्रेष्ठियों की उपस्थिति में सम्पन्न लोकार्पण समारोह अभूतपूर्व व अद्वितीय रहा ।

आचार्य श्री की कीर्ति फैलाना श्रावकों का कार्य, आचार्य वर्द्धमानसागरजी – समारोह को सम्बोधित करते हुए वात्सल्य वारिधि आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी महाराज ने कहा कि कीर्ति उसी की होती है जो धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करते हुए अपना जीवन जीते हैं । इस तीर्थ पर जैनधर्म की पताका गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी की प्रतिमा ने फैलाई वही अंतिम श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु स्वामी बारह हजार मुनियों के साथ चन्द्रगिरि पर्वत पर गए थे, उस समय भद्रबाहु स्वामी ने साधना का अंतिम अध्याय चन्द्रगिरि पर्वत पर पूर्ण किया था । उसी भूमि पर बालक विद्याधर ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेकर संयम साधना के पचास वर्ष पूर्ण किये, जो बहुत उल्लेखनीय है, उनकी धर्माराधना की कीर्ति को फैलाना श्रावकों का कार्य है, श्रावक समुदाय ने ही कीर्ति स्तम्भ का निर्माण कराया है, भट्टारक स्वामीजी ने बहुत दूरदर्शिता से निर्णय लिया है ।

सब कुछ है आचार्य श्री विद्यासागरजी के पास, पूज्य भट्टारक स्वामी – लोकार्पण अवसर पर जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी ने अत्यन्त विनम्र भाव से कहा कि आचार्यश्री विद्यासागरजी का जीवन यदि हम देखें तो पाएंगे कि साधु जीवन में जो होना चाहिये वह सब आचार्यश्री के पास है उनके जीवन में संयम है, साधना है, लेखन है, अच्छे वक्ता है, धर्म प्रभावक है, साधुओं का बहुत बड़ा समुदाय उनके द्वारा दीक्षित है, अनेक तीर्थों के तीर्थ जीर्णोद्धारक है, धर्म प्रभावना की प्रेरणा देते हैं । आचार्यश्री सक्षम है । यह संयम का विश्वतीर्थ श्रवणबेलगोला है एक ओर गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी है दूसरी और यहां अनेक राजाओं ने दीक्षा लेकर समाधि को प्राप्त किया वह पवित्र पर्वत चन्द्रगिरि है । उसी पहाड़ की तलहटी में संयम स्वर्ण जयंती वर्ष में यह कीर्ति स्तम्भ का निर्माण हम सबको प्रेरणा देगा । यह हमारा कर्तव्य है कि उनकी कीर्ति को फैलाएं ।

श्रावक श्रेष्ठ अशोक-सुशीला पाटनी भाव विभोर हुए – देश में अपने तन-मन-धन का सदुपयोग कर मुनिराजों के प्रति अनन्य श्रद्धा भक्ति रखने वाले समन्वयकारी श्रावक श्रेष्ठी श्री अशोक-सुशीला पाटनी (आर.के. मार्बल) अत्यन्त भाव विभोर हो गए । उन्होनें कहा कि उनका जीवन धन्य हो गया । आज संयम की कीर्ति पताका सम्पूर्ण भारतवर्ष में स्थापित हो रही है । 52 वर्ष पूर्व आचार्य विद्यासागरजी महाराज ने जहां ब्रह्मचर्य व्रत लिया वह भूमि आज उनके जय-जयकारों से गुंजायमान है और इतनी बड़ी संख्या में संयमी विद्यमान है ।

आवाज के जादूगर राष्ट्रकवि अजय अहिंसा बाकल ने कहा कि अपने जीवन में ऐसा अभूतपूर्व आयोजन पहली बार देखा है । जब आचार्य भगवान की प्रशंसा में संयमी जीव भाव-विभोर हो रहे है । पूर्व संध्या पर ओजस्वी कवि चन्द्रसेन जैन के संयोजन में अनेक कवियों ने शानदार कविता पाठ किया । इस अवसर पर महोत्सव कमेटी व संयम जयंती महोत्सव कमेटी के पदाधिकारी उपस्थित थे ।

कीर्ति स्तम्भ में उल्लेखित है आचार्यश्री की जानकारी – संयम स्वर्ण जयंती वर्ष के अन्तर्गत निर्मित कीर्ति स्तम्भ में आचार्यश्री के जीवन की जानकारी के साथ महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी द्वारा आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए फोटो भी अंकित किये गए हैं । विगत 50 वर्षों में आचार्य श्री द्वारा 443 दीक्षाएं प्रदान की गई हैं जिसमें 120 निर्ग्रंथ मुनि, 172 आर्यिका माताजी, 151 ऐलक, क्षुल्लक शामिल है जो सभी युवा बाल ब्रह्मचारी हैं । यह अपने आप में अनोखा विश्व कीर्तिमान है ।

8 मार्च महिला दिवस

समाज का आधा हिस्सा कहीं जाने वाली महिलाएं आज भी अपने पूर्ण अस्तित्व व हक के लिए लड़ रही है । सदियों से अबला, दासी और न जाने किन किन सम्बोधनों से नवाजी जाने वाली महिला आज भले ही इन सबसे ऊपर उठ चुकी है, परंतु विभिन्न रूपों में पुरूषों के शोषण और अन्याय अभी जारी है । जीवन के हर पड़ाव में हमेशा ही पिता, भाई, पति या बेटे के रूप में किसी न किसी पुरूष के स्वामित्व को स्वीकार करना उसकी नियति माना गया है । बहुत कुछ समय के साथ बदला है पर ये स्थिति आज भी कमोबेश वैसी ही है । आज महिलाओं की स्थिति सुधारने, उन्हें पुरूषों के बराबर का दर्जा देने के बड़े बड़े दावे किए जाने के बावजूद कुछ खास फर्क नहीं आया है ।

इसकी सबसे बड़ी वजह पुरूषों की स्वामित्व वाली सोच है । सामान्य तो क्या आपको प्रगतिशील बताने वाले पुरुष भी महिलाओं के प्रति वही दोयम दर्ज की सोच ही रखते हैं। उच्च शिक्षित हो या कम पढ़े लिखे, शहरी हो या ग्रामीण, समृद्ध हो गरीब, महिलाओं के प्रति सभी का रवैया लगभग एक सा ही मिलता है । समाज में यूं तो महिलाओं का दर्जा बहुत ऊंचा दिखाया जाता है । शक्ति, बुद्धि, विद्या, आदि महान गुणों के प्रतीक स्वरूप, दुर्गा, काली, सरस्वती आदि देवियों की पूजा की जाती है । किंतु वास्तविकता इससे कहीं अलग है । आम जीवन में सम्मान और पूजा तो दूर महिलाओं का शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शोषण इतने सहज सामान्य रूप में होता रहता है कि महिलाओं ने भी इसे अपनी नियति के रूप में स्वीकार लिया है । महिलाओं के प्रति लोगों की दोयम मानसिकता घर और बाहर, उनके कार्यक्षेत्र में भी खुले रूप से दिखाई देती है । बच्चियों की शिक्षा के क्षेत्र में आज बेटियां जिस तेजी से लड़कों से आगे निकलती दिखाई देती है वैसी प्रगति करियर क्षेत्र में नहीं दिखती । विवाह पूर्व बेटी कितना भी आगे बढ़ सकती है, किन्तु विवाह के बाद उसका करियर ससुराल वालों और पति की इच्छा के हवाले कर दिया जाता है जहां उसकी प्राथमिकता घर परिवार को संभालना होता है । क्या यह पति और पत्नि दोनों की सम्मिलित प्राथमिकता नहीं होनी चाहिए । बेटी और बहू को एक जैसा समझने के दावे करने

महिला दिवस पर महिलाओं के विषय में अनेक मुद्दे उठाए जाते हैं । महिला भ्रूण हत्या, दहेजप्रथा, दुष्कर्म, अपराध आदि अनेक ज्वलंत विषयों के बीच सामाजिक और पारिवारिक परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की वर्तमान स्थिति का आंकलन करती एक विवेचना।

वाले भी बहू के घर में आते ही परम्पराओं और फायदे कानूनों की लंबी लिस्ट लेकर तैयार रहते हैं । अधिकांश लोग अपनी शर्तों पर बहू का जॉब कराना पसंद करते हैं । उस पर भी घर के लोगों का असहयोगात्मक और नकारात्मक वातावरण प्रतिभावान बहू को अपना कैरियर और महत्वाकांक्षाओं को दबाकर केवल गृहिणी ही बनकर रह जाने के बावजूद सफलता के शिखर पर चन्द महिलाएं ही पहुंच पाती हैं । हमारे अपने समाज में आज कितनी महिलाएं हैं जो अपनी प्रतिभा और योग्यता के अनुरूप अपने कार्यक्षेत्र में शिखर तक पहुँच सकी है । कार्यक्षेत्र में भी उनके साथ भेदभाव और असहयोग का व्यवहार किया जाता है । समान या अधिक योग्यता के बावजूद उन्हें पुरूषों से कम आंका जाता है । वेतन, प्रमोशन, अवकाश आदि देने में अक्सर महिलाएं शोषण का शिकार होती है । परिवार में एक शिक्षित कामकाजी बहू का दोहरा शोषण हो रहा है । घर परिवार और बच्चों के साथ साथ बाहर की जिम्मेदारी भी उन पर डाल दी गयी है । अपेक्षाएं तो बढ़ी हैं पर अधिकार नहीं । परिवार को आर्थिक सम्बल प्रदान करने के बावजूद उसे आर्थिक स्वतंत्रता नहीं मिलती, न ही निर्णय लेने का अधिकार। मान सम्मान तो नहीं उल्टे कामकाजी होने को लेकर घर के प्रति उसके समर्पण और निष्ठा को भी शंका की दृष्टि से ही देखा जाता है । कमाऊ बेटे और कमाऊ बहू को एक सा ओहदा कदाचित ही मिलता है । दोहरी जिम्मेदारियों और अपेक्षाओं के बोझ तले खुद को ठगा हुआ सा ही महसूस करती है स्त्री, दुःख की बात यह है कि केवल पुरुषों के द्वारा ही नहीं, स्त्रियां भी स्त्रियों का शोषण कर रही है । घरों में सास, बहू , देवरानी जेठानी के किस्से मशहूर हैं । परस्पर ईर्ष्या और द्वेष के कारण वे एक दूसरे को ही नुकसान पहुंचा रही है । इन सबका दुष्परिणाम पारिवारिक विघटन और दाम्पत्य जीवन में बिखराव के रूप में सामने आ रहा है जो कि आज के समाज की गम्भीर समस्या बनती जा रही है । कुल मिला कर शिक्षा का अधिकार मिलने से महिलाओं की सोच तो बदली है किंतु पुरुषों को महिलाओं की इस प्रगतिशील छवि को स्वीकार करने में अभी कुछ और वक्त लगेगा । जिस दिन यह होगा तभी महिला दिवस मनाने का उद्देश्य पूरा हो सकेगा ।

– अनुपमा जैन, सहसंपादिका

बायोडॉटा प्रारुप का विवरण

1.	क्रमांक	9.	वर्ण
2.	प्रत्याशी का पूरा नाम	10.	व्यवसाय
3.	स्वयं / मामा का गोत्र	11.	वार्षिक आय
4.	जन्म दिनांक	12.	कुंडली मिलान
5.	जन्म समय (रिमवे समयानुसार)	13.	मंगली
6.	जन्म स्थान	14.	पत्र व्यवहार का पता
7.	शिक्षा	15.	फोन / मोबाईल नं.
8.	कद / वजन	16.	प्रत्याशी का ईमेल

प्रत्याशी का नवीन फोटो

1. 001
2. **अंकित केवलचंद जैन**
3. बिलौआ/भंडारी
4. 12.09.1991
5. 22.52
6. ककरहटी, पन्ना
7. बी.ए.
8. 5'6''
9. साफ
10. गल्ला व्यापारी
11. 6 अंको में
12. नहीं
13. नहीं
14. ककरहटी जिला पन्ना
15. 8959231857, 9993404942

1. 002
2. **नितेश जयकुमार जैन**
3. नगरपुरिया/गोट
4. 21.01.1987
5. 01.00
6. ललितपुर
7. एम.बी.ए., एलएलबी
8. 5'7''
9. गेहुँआ
10. सर्विस-इन्दौर
11. 6 लाख
12. हाँ
13. –
14. नितिन मेडिकल स्टोर, जखौरा ललितपुर
15. 9005048900, 9455888885

1. 003
2. **आकाश प्रमोद कुमार जैन**
3. सेठ/फणीश
4. 24.06.1992
5. 21.45
6. जबलपुर
7. बी.ई (ई.सी.)
8. 5'10''
9. गोरा
10. सर्विस
11. 5.00 लाख
12. हाँ
13. आंशिक
14. 422, राठी कालोनी, बलदेव बाग जबलपुर
15. 9479495556

1. 004
2. **मेघा विनोदकुमार जैन**
3. फणीश/बिलौआ
4. 13.08.1992
5. 05.10
6. कटेरा
7. एम.ए.
8. –
9. गोरा
10. –
11. –
12. हाँ
13. –
14. ग्राम पोस्ट कटेरा मऊरानीपुर जिला झांसी
15. 9956389562, 8756492791

1. 005
2. **साहिबा पारस जैन**
3. वैद्य/गुड़ारे
4. 21.03.1994
5. 8.45
6. जबलपुर
7. एम.कॉम
8. 5'2''/51कि.
9. गोरा
10. शासकीय सर्विस
11. 2 लाख
12. –
13. नहीं
14. नवआदर्श कालोनी जबलपुर
15. 8989497127, 9329475006

नोट – कान में मशीन लगाते है ।

अहिंसा हमारे देश की संस्कृति और पहचान–आचार्य

ज्ञान सागर पंचकल्याणक मनोरंजन का मेला नहीं हैं – ब्रह्मचारिणी अनीता दीदी

विशाल जैन पवा । तालबेहट (ललितपुर) उ.प्र. वीर बुन्देलखण्ड की पावन धरा एवं महाराज मर्दन सिंह की नगरी तालबेहट में आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज के संयम स्वर्णिम दीक्षा महोत्सव के पावन प्रसंग एवं गोम्मटेश्वर बाहुबलि के 88वें महामस्तकाभिषेक की पावन बेला और अष्टान्हिका महापर्व में सरकोद्धारक षष्ठ पट्टाचार्य परमपूज्य आचार्यश्री 108 ज्ञान सागरजी महाराज के ससंघ मंगलमय सानिध्य में ऐतिहासिक श्रीमाज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक जिन बिम्ब प्रतिष्ठा एवं विश्व शान्ति महायज्ञ हवन महामहोत्सव का आयोजन 22 से 27 फरवरी तक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ । जिसमें प्रतिष्ठाचार्य ब्रह्मचारी जय निशांत भैयाजी टीकमगढ़ एवं दशम प्रतिमाधारी अशोक भैयाजी लिधौरा के निर्देशन में सह प्रतिष्ठाचार्य पं. मनीष जैन टीकमगढ़ ब्र.दीपक भैया टेहरका एवं पं. देवेन्द्र कुमार शास्त्री सौंरई ने विभिन्न धार्मिक क्रियाएँ विधि विधान से सम्पन्न करायी । ध्वजारोहण श्रीमती मीना-अनिल जैन 'ललितपुरवाले', श्री विद्यासागर रोडवेज नागपुर एवं मुख्यमंगल कलश की स्थापना पं. महेन्द्र कुमार जैन 'प्रवक्ता' विदिशा ने की । संगीतकार सुनीलकुमार एण्ड पार्टी भोपाल के सुन्दर भजनों की प्रस्तुति में सौधर्म इन्द्र अमृता-अजय जैन विरधा, कुबेर इन्द्र रचना-पुष्पेन्द्र जैन बिरधा, महायज्ञ नायक रजनी-अनिल जैन गुंदेरा, भरत चक्रवर्ति रचना-अनिल जैन बबीना, बाहुबलि अंजना-सुशील जैन पवा, ईशान इन्द्र संध्या-श्रेयांश जैन बबीना, सनतकुमार इन्द्र शुलभा-ललित जैन ललितपुर, माहेन्द्र इन्द्र दीपा-प्रवीण जैन कड़ेसरा एवं सोम श्रेयांश सुरेन्द्र कुमार जयकुमार पवैया कड़ेसरा सहित समस्त इन्द्र-इन्द्राणियों ने पंचकल्याणक की विभिन्न क्रियाएँ सम्पन्न की । 23 फरवरी को सराक सम्मेलन एवं 21 फरवरी को कॉन्फ्रेंस में पत्रकार वार्ता का आयोजन किया गया, जिसमें आचार्य श्री ज्ञान सागरजी महाराज ने बढ़ते आतंकवाद एवं इन्टरनेट मोबाइल के माध्यम से बिगड़ते देश के भविष्य और अहिंसा के अभाव में प्राकृतिक असन्तुलन को चिन्ता का विषय एवं बढ़ते डिप्रेशन का कारण बताया ।

आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज का शुभागमन 15 फरवरी को हुआ तो कस्बे को अयोध्या नगरी जैसा सजाया गया एवं श्रद्धालुओं ने निकटवर्ती ग्राम कड़ेसरा कला से आचार्यश्री की ससंघ भव्य अगवानी की, नगर को तोरण द्वारों से सजाया गया एवं आचार्य श्री के पाद प्रक्षालन एवं मंगल आरती की गयी ।

22 फरवरी को घटयाला की भव्य शोभायात्रा से श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया तत्पश्चात जिन बिम्ब प्रतिष्ठा की समस्त क्रियाओं में पहले दिन गर्भ कल्याणक का पूर्व रूप एवं 23 फरवरी को उत्तर रूप, 21 फरवरी को जन्म कल्याणक, 25 फरवरी को तप कल्याणक 26 फरवरी की ज्ञान कल्याणक एवं अन्तिम दिन 27 फरवरी को मोक्ष कल्याणक की क्रियाएँ सम्पन्न की गयी एवं विश्व शान्ति महायज्ञ हवन का आयोजन किया गया ।

मनोज शर्मा, कंठस्थाकला केन्द्र दिल्ली ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सुन्दर प्रस्तुति दी । इस अवसर पर आचार्यज्ञान सागरजी महाराज ने कहा कि अहिंसा हमारे देश की संस्कृति और पहचान है, देश-विदेश के बड़े - बड़े डॉक्टर वैज्ञानिकों ने भी अहिंसा को स्वीकार करते हुए शाकाहार को सर्वश्रेष्ठ आहार एवं गृहण करने योग्य बताया गया है । उन्होनें पाषाण से भगवान बनाने की क्रियाओं को प्रतिदिन अपने मंगल प्रवचन में समझाया एवं कहा कि तम से ही वासना पर विजय मिलती हैं, यह दिगम्बर चोला संयम की साधना और वासना मुक्ति की पर्याय है । रात्री में मंगल आरती सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं शास्त्र प्रवचन का आयोजन किया गया । प्रतिष्ठाचार्य जय निशांत भैयाजी ने कहा कि जिनबिम्ब प्रतिष्ठा कार्यक्रम पाषाण से भगवान बनाने की कला वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है । अशोक भैयाजी ने कहा कि धार्मिक क्रियाओं में विशुद्धि से ही मन्दिरों का अतिशय बढ़ता है । कार्यक्रम के समापन पर विशाल रथ यात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें श्रीजी की शोभायात्रा हर्षोल्लास के साथ निकाली गयी । आचार्य श्री की संघस्थ ब्रह्मचारिणी अनीता दीदी ने कहा कि यह पंच कल्याणक मनोरंजन का मेला नहीं है, उन्होनें कहा कि दौलत शोहरत से नहीं भाग्यशाली तो चारित्र की सम्पदा, वाले होते हैं, लेकिन आज के समय में दर्शन नहीं प्रदर्शन की प्रधानता है । भक्ति भगवान की और भक्त पत्थर के उनका अन्तर्मन सूखा ही रहता है । भक्त गीले कपड़े नहीं शक्कर के घोल जैसे होना चाहिए । जिसमें श्रद्धा और आस्था को कभी मन से अलग न हो । दु:ख हरण, कर्मनाश एवं विश्व शांति की मंगलभावना से किये धार्मिक अनुष्ठान हमेशा सफल होते हैं । कार्यक्रम में आचार्य के संघस्थ मुनि उपाध्याय अभिनन्दन सागर, मुनि विश्वास सागर, मुनिज्ञेय सागर मुनि सुधर्म सागर, आर्यिका कीर्तिमति, आर्यिका कुमुद मति, क्षुल्लिका कीर्तिमति ने धर्म प्रभावना की । माता-पिता की भूमिका में श्रीमती सुशीला देवी दीपचन्द्र जैन गौरवाले रहे । पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव प्रभारी प्रवीण जैन 'दैनिक विश्व परिवार' झाँसी सहित भारी संख्या में श्रद्धालुओं का सहयोग रहा । कार्यक्रम का संचालन पावागिरीजी अध्यक्ष ज्ञानचन्द्र पुरा एवं पार्षद प्रतिनिधि चौधरी चक्रेश जैन ने किया । अन्त में वासुपूज्य दिगम्बर जैन मन्दिर के महामंत्री प्रवीण जैन कड़ेसरा ने सभी का आभार व्यक्त किया ।

पार्श्वनाथ सहकारी साख संस्था का रजत जयंती समारोह सानंद सम्पन्न

साधना जैन, इन्दौर । देश की प्रथम गोलालारीय समाज सदस्यों द्वारा संचालित सहकारी साख संस्था का रजत जयंती वर्ष नगर के नवग्रह जिनालय पर संस्था सदस्यों के परिजनों के साथ मनाया गया । प्रात:

जिनालय पर भक्ताम्बर पाठ के वाचन पश्चात सदस्यों के लिए स्वल्पाहार रखा गया तत्पश्चात विशेष सभा में संस्थापक अध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार जैन 'सायकल वाले' पूर्व अध्यक्ष श्री प्रमोद कुमार पेठेवाले, श्री विजयकुमार जैन 'बियाबानी वालों' के साथ गोलालारीय समाज के स्थाई ट्रस्टी श्री हरीशचंद जैन व इंजी आनंद कुमार जैन सहित समाज अध्यक्ष श्री कोमलचंद जैन, सचिव श्री बाहुबली जैन के साथ वर्तमान अध्यक्ष श्री सुधेश जैन द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया । मंगलाचरण पश्चात अध्यक्ष सुधेश जैन ने संस्था के गत 25 वर्षों के सफर की जानकारी दी । सर्वप्रथम उन्होनें समाज के वरिष्ठ सदस्य व स्थाई ट्रस्टी श्री रमेशचंद्र का विशेष योगदान माना जिनके प्रयासों से ही देश की प्रथम गोलालारीय सहकारी साख संस्था का निर्माण व सुचारू संचालन संभव हो पाया । जब जब संस्था को उनके सहयोग की जरूरत पड़ी आपने सहर्ष योगदान देकर संस्था की राह आसान बनाई ।

साथ ही पूर्व अध्यक्ष श्री विजयकुमार जैन बियाबानी के कार्यकाल में संस्था ने जो ऊंचाईयां प्राप्त की उसके लिए उनका हृदय से आभार माना । । संस्था की कार्यकारिणी की और से संस्थापक अध्यक्ष व पूर्व अध्यक्ष का शाल श्री फल भेंट कर सम्मान कर प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया । अध्यक्ष द्वारा संस्था की गतिविधियों की जानकारी उपस्थित सदस्यों को देते हुए बताया कि वर्तमान में संस्था द्वारा एक लाख रुपये की राशि का ऋण प्रदान किया जा रहा है । सभी सदस्यों को परिवार कल्याण योजना का लाभ भी प्रदान किया जाता है । तत्पश्चात रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में सदस्यों को स्मृति स्वरूप उपहार भेंट किया गया पश्चात संस्था उपाध्यक्ष श्रीमती संगीता जैन व साधना जैन द्वारा तंबोला खिलाया गया । विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार प्रदान किए गए । सभा के अंत में आभार पूर्व अध्यक्ष श्री विजय जैन द्वारा आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सदस्यों के सहयोग से ही संस्था निरंतर प्रगति की राह पर अग्रसर है । सभा के अंत में सदस्यों ने स्वरूचि भोजन का आनंद लिया ।

गायों ने आमंत्रित कर लिया आचार्य विद्यासागरजी महाराज को मिठाई की दुकान में..

रायपुर । भारतीय गायों की गुणवत्ता और उनके प्रति प्रेम, वात्सल्य के चलते राष्ट्र संत दिगम्बराचार्य विद्यासागरजी महाराज अपने संघ के साथ गुड फूड मिठाई की दुकान पर उस समय पहुंच गए, जबकि वह रायपुर में प्रवेश कर रहे थे । दिगम्बर साधु किसी की दुकान प्रतिष्ठान पर बिना कारण कभी नहीं जाते । लेकिन रायपुर में भारतीय गायों के ए2 दूध का बड़ा डेयरी फार्म चला रहे श्री राजेन्द्र तमोली का ही यह मिठाई का शोरूम है । जिस पर सिर्फ गाय के दूध की बनी मिठाईयाँ ही मिलती है । एक और आचार्य श्री की आगवानी प्रदेश के मंत्री नेतागण कर रहे थे, उनकी आगवानी में दर्जनों बैण्ड, मंगल कलश, धर्म ध्वजायें, हाथी, घोड़े चले रहे थे, इन सबको दरकिनार कर आचार्य श्री विद्यासागर महाराज राजेन्द्र तमोली के निवेदन पर उसके मिठाई के शोरूम को निर्धारित मार्ग छोड़कर देखने चले गए ।

आचार्य श्री के साथ ही उनके पूरे संघ के साधुगण भी गुड फूड पर पहुंच गए । अवलोकन करके आचार्य श्री लौटे तो उनका मिठाई की दुकान पर जाना चर्चा विषय बन गया । लोगों ने कहा कि आखिर आचार्य विद्यासागर जी महाराज मिठाई की दुकान पर क्यों गए । तो विद्वानों ने बताया कि भारतीय गाय का ए2 दूध अमृत के समान होता है और जब एक व्यक्ति ने समर्पित होकर गौसेवा व संरक्षण का कार्य किया है तो गायों के प्रति आत्मीयता के भाव से आचार्य श्री मिठाई की दुकान पर भी पग रख दिये । आचार्य श्री के इस कृत्य से अकेले राजेन्द्र तमोली ही नहीं वरन पूरे भारत वर्ष में भारतीय गायों के लिए समर्पित गौ भक्तों का सम्मान बढ़ गया है।

पुण्य स्मृति : श्रीमती कुसुम मानोरिया

देह त्याग –
दि. 22 जनवरी 2018
सोमवार

श्रद्धा सुमन

कुन्दनलाल जैन मानोरिया

पुत्र – श्रीमती लता राजेश जैन, श्रीमती मनीषा संजय मानोरिया
प्रपौत्र – श्रीमती सुरभि सिद्धार्थ जैन, सिद्धांत जैन, पारस, संस्कृति मानोरिया
पुत्रियां – श्रीमती पुष्पावेन कैलाशचन्द्र (अहमदाबाद)
श्रीमती स्नेहलता गणेशराम (बछौड़ा)
श्रीमती उषावेन श्रीचंद्र (अहमदाबाद)
श्रीमती किरण अनिल कुमार (भोपाल)
श्रीमती साधना अनंत स्नेही जमोरिया (नसीराबाद)

स्मृति में – कुसुम कुन्दन जैन, मानोरिया धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट की स्थापना 25 लाख रुपये से की गयी । जिसके ब्याज से धार्मिक कार्य, सामाजिक कार्य, जरुरतमंद को शिक्षा, स्वास्थ्य आजीविका में सहयोग एवं पाठशालाओं को प्रोत्साहन के लिये सहयोग किया जायेगा ।

परामर्श प्रमुख

श्री कैलाशचंदजी जैन, झाँसी

श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन, अहमदाबाद

प्रधान संपादक

सिंघई राजेन्द्र जैन, 9424013136

सह संपादिका

श्रीमती अनुपमा-रजनीश जैन, 9009066884

श्रीमती साधना-सुनील जैन, 8602696165

कोषाध्यक्ष

सुधेशकुमार जैन, 9827254111

प्रबंध संपादक

राजेन्द्रकुमार जैन, सायकलवाले 9425353972

खुशालचंद जैन, 9302123879

कोमलचंद जैन, 9329524227

संयोजक एवं प्रकाशक

बाहुबली जैन, 9827247847

समाज के श्रेष्ठीजनों से पुन: सादर अनुरोध है कि समाज की एकमात्र सामाजिक पत्रिका गोलालारीय दर्शन के निरंतर प्रकाशन के लिए आप शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक, संरक्षक, विशेष सहयोगी बनकर पत्रिका को आर्थिक संबल प्रदान करें।

शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक अपना संक्षिप्त परिचय सपत्नीक फोटो सहित एवं संरक्षक तथा विशेष सहयोगी सदस्य अपना संक्षिप्त परिचय फोटो सहित भेजे ताकि प्रकाशन किया जा सके।

सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक (अ.जा.)	21000/-
परम संरक्षक (अ.जा.)	11000/-
संरक्षक (अ.जा.)	5100/-
विशेष सहयोगी (अ.जा.)	2100/-
सहयोगी सदस्य	1100/-
सहयोग राशि	500/-

आप 'गोलालारीय दर्शन' के बैंक खाते में सहयोग राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के खाता क्रं. 63048875855
IFSC Code: SBIN0030134
में चेक द्वारा ही जमा कर स्लीप की फोटोकॉपी व अपना नवीन फोटो मय जानकारी के हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड व कार्यालय पते पर अवश्य भेजें ताकि आपको रसीद भेज कर आपका विवरण प्रकाशित किया जा सके।
नोट - 8 मार्च 2014 से अन्य शहरों से जमा की जाने वाली राशी पर बैंक शुल्क न्यूनतम 50 रु. कर दिया है।

अत: बायोडाटा शुल्क मल्टीसिटी चेक के द्वारा ही पत्रिका के पते पर भेजे।

विज्ञापन दर (कलर)

अंतिम पेज	15000/-
फुल पेज (अंदर)	11000/-
1/2 पेज	5000/-
1/4 पेज	3000/-
मांगलिक बधाई फोटो सहित	2000/-
शोक संदेश फोटो सहित	1000/-
बॉयोडाटा फोटो सहित	300/-

बायोडाटा, समाचार व अन्य कोई जानकारी पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु गोलालारीय दर्शन 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर अथवा श्री राजेन्द्रकुमार जैन हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड़, इन्दौर पर भेंजे।

हमारा नगर हमारे मंदिर - अतिशय क्षेत्र बनेड़ियाजी

मंदिर में स्थापित मूर्तियों के चमत्कारों की गाथाएं जो आपने कई बार सुनी होगी लेकिन क्या आप मध्यप्रदेश के इस प्राचीन मंदिर की दिव्यता के बारे में जानते हैं? 1000 से ज्यादा वर्ष पुराने इस मंदिर की विशेषता है कि इस मंदिर को कभी किसी ने बनवाया नहीं, बल्कि ये देवलोक से उड़कर यहां पहुंचा है। वैज्ञानिक भी आज तक इस बात का राज नहीं तलाश सके हैं कि बिना नींव के भारी दिवारों वाला यह मंदिर यहां कैसे स्थापित हुआ। मध्यप्रदेश के इंदौर शहर की देपालपुर तहसील के बनेडिया गांव में स्थित श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बनेड़िया जी, जैनियों के प्रमुख तीर्थस्थल में शामिल है। इस मंदिर से जुड़ी प्राचीन कथा इसे बेहद चमत्कारी बनाती है। कहा जाता है कि ये मंदिर यहां प्रकट हुआ है इसे बनवाया नहीं गया। इस बात की सच्चाई जाननें के लिए मंदिर की खुदाई करवाई गई तो लोग चौंक गए। खुदाई में कहीं भी पक्की नींव का पता नहीं चला। बिना किसी ठोस नींव के यहां स्थापित इस अष्टकोणी भव्य मंदिर में एक भी खंभा नहीं हैं और मंदिर की दीवारें 6 से 8 फीट चौड़ी है।

चौथे काल की प्राचीन पाषाण प्रतिमाएं - मंदिर के निकट रहने वाले संजय जैन ने बताया कि हम छ: पीढ़ियों से इस मंदिर की सेवा में जुटे हैं। पूर्वजों से यही सुना है कि एक तपस्वी मुनिराज इस मंदिर को लेकर कहीं जा रहे थे, किसी कारणवश उन्होनें मंदिर को यहां रखा और तपस्या करने लगे, शाम हो गई तो मंदिर यहीं स्थापित हो गया। तब से ये मंदिर यहीं है। मंदिर में भगवान 1008 अजीतनाथ जी की प्रतिमा स्थापित है। इसके अलावा मणिभद्र बाबा का क्षेत्रकाल भी यहां है। यहां सफेद पाषाण की कई प्राचीन मूर्तियां भी है जिन पर 1248 संवत विक्रम का समय लिखित में अंकित है। ये मूर्तियां चौथे काल की बताई जाती है।

पूर्णिमा की पूजा का है महत्व - मंदिरजी की व्यवस्था को संभाल रहे गंगवाल परिवार ने बताया कि ये भारत का एकमात्र अतिशय क्षेत्र है जिसकी नींव नहीं है। यहां पर पूर्णिमा को विशेष पूजा होती है और मेला लगता है जिसमें देश के कोने-कोने से श्रद्धालु शामिल होते हैं। मान्यता है पूर्णिमा को यहां पूजा में शामिल होने से हर मनोकामना पूरी होती है। इसी मान्यता के चलते कई श्रद्धालु लगातार सात, आठ या पन्द्रह पूर्णिमा तक निरंतर यहां आते हैं।

4 फीट ऊंची भगवान अजितनाथ की प्रतिमा - इस भव्य प्राचीन मंदिर के पास एक बड़ा तालाब है। मुख्य मंदिर गोलाकार है जिसमें भगवान 1008 अजीतनाथ जी की लगभग 4 फीट ऊंची प्रतिमा स्थित है। इस मूर्ति के अलावा भी मंदिर में कई प्राचीन मूर्तियां मौजूद है। जिनमें 1008 भगवान आदिनाथ, भगवान चंद्रप्रभु, भगवान पार्श्वनाथ और भगवान शांतिनाथ की मूर्तियां शामिल है। मूल प्राचीन मंदिर को श्रद्धालुओं ने भव्य मंदिर का रूप दे दिया है। मंदिर तक पहुंचने के लिए इंदौर से बस या कार या बाइक किसी के द्वारा भी आया जा सकता है। इंदौर से 45 किमी दूर देपालपुर से 4 किमी की दूरी पर स्थित है ये दिव्य चमत्कारी मंदिर।

संकलन- अनुपमा जैन, इन्दौर

नवीन मंदिर के लिए निर्माण पूर्व कुएँ का भूमि पूजन संपन्न - श्री गोलालारीय दिगम्बर समाज न्यास के नवीन मंदिर निर्माण जो कुम्हेड़ी स्थित आदिनाथ नगर में होना है। उस मंदिर व्यवस्था हेतु कुएँ का निर्माण का भूमि पूजन समाज के स्थायी ट्रस्टीगण, समाज की प्रबंध कार्यकारिणी सदस्यों के साथ समाज के वरिष्ठ उपस्थित रहें। शीघ्र ही कुएँ का निर्माण कर नवीन मंदिर का निर्माण के लिए भूमि शुद्धि एवं भूमि पूजन का कार्यक्रम अप्रैल माह के अंत तक प्रस्तावित है।

अनुकरणीय पहल...

अपनी खुशी के लिये तो सभी जीते हैं लेकिन दूसरों की खुशी और दूसरों के सु:ख दु:ख में सहयोगी बनकर बहुत कम लोगों की सोच बनती है, विदिशा में श्री कुंदनलाल जी मानोरिया की धर्मपत्नी श्रीमति कुसुमबाई मानोरिया के देहावसान उपरान्त श्री कुंदनलालजी मानोरिया ने अपनी जमा पूंजी 25 लाख रूपये पारमार्थिक ट्रस्ट का निर्माण करा। यह ट्रस्ट शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका में सहयोग एवं पाठशालाओं को प्रोत्साहन और धर्मार्थ कार्यों के लिये कार्य करेगा। जिसकी अनुमोदना उनके दोनों पुत्र श्री राजेश मानोरिया एवं संजय मानोरिया ने करते हुए पूज्य माताजी की स्मृति को सदैव ताजा बनाये रखते हुए की। स्थानीय समाज ने उनके इस प्रयास की बहुत सराहना की।

* विनम्र श्रद्धांजली *

* श्री राजकुमार जैन व ऋषभ जैन, अहमदाबाद की पूज्य माताजी **श्रीमती कपूरीदेवी** धर्मपत्नी स्व. श्री गयाप्रसादजी का देवलोकगमन दि. 21 जनवरी 18 को अहमदाबाद में हो गया। आप धार्मिक एवं सरल स्वभाव की महिला थी।

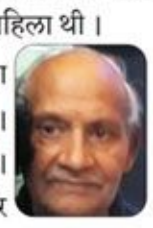

* **श्री दीपचंदजी जैन** डंगराने वालों का देवलोकगमन दि. 22 जनवरी 18 को इन्दौर में हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति एवं समाजसेवी व्यक्तित्व के धनी थे। समाज मंदिर के लिए आपने समय-समय पर अपने परिवार की ओर से सहयोग किया।

* श्री कुन्दलालजी मनोरिया की धर्मपत्नी **श्रीमती कुसुम मनोरिया** का देवलोकगमन 22 जनवरी 18 को विदिशा में हो गया। आपकी स्मृति में परिजनों ने एक धार्मिक व पारमार्थिक ट्रस्ट की स्थापना की। जिसमें धर्म, शिक्षा व सामाजिक कार्य के लिए सहयोग किया जावेगा।

* स्व. हीरालालजी जैन सायकलवालों के द्वितीय सुपुत्र **श्री सुरेन्द्रकुमार जैन, भोपाल** का देवलोकगमन 25 जनवरी 18 को भोपाल में हो गया। आप अत्यंत सरल स्वभाव व धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। निधन पश्चात आपकी मंशा अनुसार परिजनों ने आपकी देहदान कर एक अनुकरणीय कार्य कर समाज के लिए एक विस्मरणीय मिसाल पेश की।

गोलालारीय दर्शन के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित विवरण

घोषणा फार्म - 4 (नियम 8)

1.	प्रकाशक स्थल	127, देवी अहिल्या मार्ग, इन्दौर
2.	प्रकाशन अवधि	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	बाहुबली जैन
	क्या भारत का नागरिक हैं	हाँ
	पता	310, उषा नगर एक्स., इन्दौर
4.	प्रकाशक का नाम	बाहुबली जैन
	क्या भारत का नागरिक हैं	हाँ
	पता	310, उषा नगर एक्स., इन्दौर
5.	संपादक का नाम	राजेन्द्र जैन
	क्या भारत का नागरिक हैं	हाँ
	पता	डीकेएन 230, विजय नगर, इन्दौर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक से साझेदार या हिस्सेदार हों	श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास, इन्दौर

मैं बाहुबली जैन एतद् द्वारा घोषित करता हूँ मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

हस्ताक्षर

बाहुबली जैन

1 मार्च 2018 (प्रकाशक के हस्ताक्षर)

परिणयोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ...

सौ.कां. अंकिता

सुपौत्री : स्व. श्री आनंदकुमारजी-स्व. श्रीमती गुलाबबाई जैन
सुपुत्री : अजीतकुमार-सुनीता जैन (वेद)
इन्दौर

संग

चि. अभिषेक

सुपौत्र : स्व. श्री हुकमचंदजी-स्व. दयाबाईजी जैन
सुपुत्री : शाह श्री कृष्णकुमारजी-रेखाजी जैन (अलया)
ललितपुर

का

शुभविवाह

दिनांक 19 जनवरी को घुघंट गार्डन, इन्दौर में हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

आयुष्मान अर्पित

सुपौत्र : स्व. श्री फूलचंदजी जैन
सुपुत्र : ज्ञानचंद-अनिता जैन, कुरवई विदिशा

संग

आयुष्मति चंचला

सुपौत्री : स्व. श्री सुकमालचंदजी जैन
सुपुत्री : श्री सुरेन्द्रकुमारजी-मंजुलताजी जैन, महावीरजी

का शुभ विवाह
दिनांक 12 नवम्बर 2017 में तीर्थक्षेत्र श्री महावीरजी में सादगीपूर्वक साआनंद संपन्न...

चि. वैभव

सुपौत्र : स्व. श्री दीपचंदजी-स्व.श्रीमती रज्जीबाईजी जैन
सुपुत्र : श्री विजयकुमार-सौ. चन्द्रकांता जैन, बामोरकलां

संग

आयुष्मति दिव्या

सुपौत्री : स्व. श्री हुकुमचंदजी-श्रीमती कमलाजी जैन
सुपुत्री : श्री दीपककुमार-श्रीमती कल्पनाजी जैन, इन्दौर

का शुभ विवाह
दिनांक 4 फरवरी 2018 में फतेहपुरिया मांगलिक भवन, इन्दौर में हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न...

Firm : Shri Parshwanath Tourism Private Limited, 9584491666
Shri Parshwanath Entrerprises

विवाहोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ...

चि. आशीष

सुपुत्र : श्रीमती उषा-अश्विन कुमार जैन
उपाध्यक्ष गोलालारीय समाज, जबलपुर

संग

सौ. कां. शुचिता

सुपुत्री : श्रीमती नम्रता-अशोककुमारजी जैन
नागपुर

का परिणयोत्सव
दिनांक 2 फरवरी 2018 को
जबलपुर में हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ ।

नव दाम्पत्य की हार्दिक शुभकामनाएँ...

चि. इंजी. अंकित

सुपौत्र : स्व. श्री भगवानदासजी जैन
सुपुत्र : कैलाशचन्द्र-पूर्णिमादेवी जैन
उज्जैन

चि. डॉ. वैभव

सुपौत्र : स्व. श्री भगवानदासजी जैन
सुपुत्र : संतोषकुमार-सुधादेवी जैन
उज्जैन

सौ.कां. नेहा

सुपौत्री : स्व. श्री श्यामलालजी जैन
सुपुत्री : श्री विनोदकुमारजी-विनोदीजी जैन
अहमदाबाद

सौ. कां. आस्था

सुपौत्री : स्व. पं. श्री लक्ष्मीचंदजी- सरोज जैन
सुपुत्री : श्री राजेशकुमारजी-कुंजकिरणजी जैन
जावरा

का शुभ विवाह

दिनांक 3 फरवरी 2018 को श्री महावीर दिगम्बर सिद्ध क्षेत्र तपोभूमि, उज्जैन पर आनंद पूर्वक संपन्न ।

विवाहोत्साय की हार्दिक शुभकामनाएँ...

संग

आयुष्मान नकुल

सुपौत्र : श्रीमती सुखदेनबाई-स्व. श्री बालंचदजी जैन, सराफ

सुपुत्र : श्रीमती शैलेष-जिनेन्द्रकुमार जैन

आयुष्मति अंजलि

सुपौत्री : श्रीमती शांतिबाई-स्व. श्री बाबूलालजी जैन

सुपुत्री : श्रीमती अल्पना-आजादजी जैन

का परिणयोत्सव

दिनांक 6 फरवरी 2018, कलश मण्डपम्, इन्दौर

में हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

नव दाम्पत्य की हार्दिक शुभकामनाएँ...

हृदयांशी इंजी. मोनिका

सुपौत्री : शीलचंद 'पत्रकार'-कीर्तिशेष कस्तूरीबाई मोदी

सुपुत्री : रवीन्द्रकुमार-संध्या मोदी

ललितपुर

हृदयांश इंजी. योगेश

सुपौत्र : कीर्तिशेष लक्ष्मणप्रसादजी-कीर्तिशेष भूरीदेवीजी जैन

सुपुत्री : शाह श्री ताराचंदजी-सुधा देवी जैन

नौगांव, छतरपुर

का शुभ विवाह

दिनांक 23 फरवरी को होटल संदीप गार्डन

ललितपुर में हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

।। श्री शान्तिनाथाय नमः ।।

भाव भीनी श्रद्धांजली

उसको नही देखा हमने कभी, पर उसकी जरूरत क्या होगी ।
हे माँ तेरी सूरत से अलग, भगवान की सूरत क्या होगी ।।

वीर प्रभु से प्रार्थना है कि हमारी माताजी की आत्मा को शान्ति प्रदान करे ।

स्व. कपुरीदेवी ग्याप्रसाद जैन

अरिहंत शरण दि. 21-1-2018 (90 वर्ष)

हर बात को तुम भुलो मगर माँ-बाप को मत भुलना, उपकार इनके लाखों है, इस बात को मत भुलना

स्व. ग्याप्रसाद जैन का शोकाकुल परिवार

राजकुमार - ममतादेवी जैन | नवीनकुमार - सोनल जैन | ऋषभकुमार - सुनीतादेवी जैन
नीलेषकुमार - वंदना जैन | निलय, सम्यक, हितार्थ, तनिष्का | ऋषीकुमार - विंजल जैन
आदिकुमार जैन, लवकुमार जैन, जियान्सी

RESIDENTS
11 Golden Tulip bungalow near
Manekbaugh Society, Ambawadi,
Ahmedabad

HEAD OFFICE
35 World business house
Opp. Primal garden Elliesbrige,
Ahmedabad

M.: 9825076721
Ph.: 079-40021021, 40327662-63
Email : rishbh_jain@yahoo.co.in
president@ssiu.ac.in

India's 1st
University for Startups
Swarnim
Startup & Innovation
University
(Approved by Government of Gujarat under Gujarat Private University Act 2009)
University Campus
At. Bhoyan Rathod, Opposite IFFCO,
Near ONGC WSS, Adalaj Kalol Highway,
Gandhinagar, Gujarat – 382420.

- Ratmani Industries Pvt Ltd.
- Swastik Infrastructure Pvt Ltd
- Arihant Trading Co.
- Sanmati Vidhyalay
- Arihant Fabricator

डीझाईन : सिद्धचक्र ग्राफिक्स
अहमदाबाद (079) 25620579, 9428115307

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है, सम्पादक मण्डल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है । किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा ।

स्वामी श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास के लिए प्रकाशक, मुद्रक बाहुबली जैन द्वारा प्रकाशित प्रतीक्षा ग्राफिक्स127, देवी अहिल्या मार्ग इन्दौर से मुद्रित एवं ग्राफिक्स ज़ील कम्प्यूटर एंड ग्राफिक्स 356, तिलक नगर श्री गोलालारीय दि. जैन समाज न्यास, 64, न्यू देवास रोड़, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित